चन्दामामा
जनवरी १९९३
Rs 4

"अब अच्छें बच्चे बनकर फ्लौपी,
तुम नहानें के लिए आजाओ ।"

आपका बच्चा और फ्लौपी
आप उनको कभी अलग नहीं कर सकते ।

अनेक प्रकार के मुलायम खिलौने चन्दामामा कलैक्शन में हर एक कि एक अनोखा पहचान ।

चन्दामामा कलैक्शन कि प्रत्येक खिलौना विशिष्ट प्रकार से बने हैं, ताकि वे आपके बच्चे को सालों - साल तक दोस्ती का एहसास दिलायेगें ।

पांडा

बौव - बौव

- पूरी तरह सुरक्षित - सभी उम्र के बच्चों के लिए ।
- टिकाऊ - बेहतरीन क्वालिटि सिनथेटिक फायिबर से बनी ।
- धुलाई - आकार नहीं खोयेगा ।

और अब एक आशर्चय उपहार! प्रत्येक चन्दामामा मुलायम खिलौना खरीदने के बाद आप अपने दुकानदार से

जम्बो,

माँगे । कूपन भरने के बाद दिये हुए पते पर भेजें । हम डाक द्वारा आपको पुरस्कार भेजेंगें जो आपके बच्चों कों घंटो तक खुश रखेंगे । अभी खरीदें - उपहार सिर्फ थोड़ी दिनों कि लिए ! सभी मुख्य दुकानों में उपलब्ध ।

स्पोर्टी

ARTIGICT/1140

चन्दामामा

जनवरी १९९३

★

अगले पृष्ठों पर

★

एक प्रति : ४ रुपये

वार्षिक चन्दा : ४८ रुपये

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

प्रेम-धर्म

१९९३ का वर्ष भारत और भारतवासियों के लिए विशेष महत्व रखता है, क्योंकि इस वर्ष स्वामी विवेकानंद के कन्याकुमारी में हिंद महासागर, बंगाल की खाड़ी तथा अरब सागर के संगम पर चट्टान पर बैठकर तपश्चर्या करने के सौ वर्ष पूरे हो रहे हैं । इसके अलावा उनके शिकागो में विभिन्न धर्मों की संसद में अपना प्रवचन देने के सौ वर्ष भी पूरे हो जाते हैं । इसी प्रवचन ने हिंदू धर्म के प्रति दुनिया के लोगों की आंखें खोल दी थीं ।

कहा जाता है कि जब वह अपना प्रवचन देने के लिए खड़े हुए तो सबसे पहले उन्होंने मंच पर बैठी महान विभूतियों का अभिवादन करने के बजाय अपने सामने बैठे विशाल जन-समूह का अभिवादन किया । उन्होंने उन्हें "अमरीका के मेरे भाइयो और बहनो" कहकर संबोधित किया । ये ऐसे चिरस्मरणीय शब्द थे जिनसे श्रोताओं के बीच एक लहर-सी दौड़ गयी । उनके इस अभिभाषण से न केवल अमरीकियों की पूरी पीढ़ी में एक प्रकार का परिवर्तन-सा आ गया, बल्कि विश्व के तमाम चिंतनशील स्त्री और पुरुष भी उससे प्रभावित हुए ।

स्वामी जी ने उनकी ओर प्रेम से देखा, और प्रेम से ही उन्हें संबोधित किया । उन्होंने उन्हें बताया कि आदमी-आदमी सब बराबर हैं और उनके बीच कोई अंतर नहीं है, चाहे वे किसी भी समाज के हों या किसी भी धर्म को मानते हों । इससे पहले एक अवसर पर उन्होंने कहा था, "जैसे ही कुछ मुट्ठी-भर लोग एक दूसरे से प्रेम करने लगेंगे, एक नये धर्म का जन्म होगा ।"

उनके लिए भारत एक था और तमाम भारतीय भाई-भाई थे । स्वतंत्रता-प्राप्ति के स्वामी जी के शब्द हमारे कानों में बराबर गूंजते हैं: "सभी राष्ट्रों में हमारा ही एक राष्ट्र ऐसा है जिसे कभी दूसरों पर विजय पाने की लालसा नहीं रही । इसी आशिष की बदौलत हम आज ज़िंदा हैं ।"

लेकिन विजय पाने का समय भी आ ही गया है-हमें अपने अहं पर विजय पानी है और दूसरों की आंखों में अपने को देखना है ।

वर्ष : ४५ | जनवरी १९९३ | अंक : ५
एक प्रति : रु. ४/- | वार्षिक चन्दा : रु. ४८/-

चांदोबा
चन्दामामा
CHANDAMAMA

खबरें संसार की

ग्वातेमाला के नागरिक को शांति पुरस्कार

इस साल भी, पिछले साल की तरह नोबेल शांति पुरस्कार एक महिला को मिला है । पिछले साल यह पुरस्कार प्राप्त करने वाली म्यांमार (भूतपूर्व बर्मा) की श्रीमती आंग सान सू ची थीं । इस वर्ष यह पुरस्कार ग्वातेमाला की सुश्री रिगोबर्ता मेंचू को मिला है जो कि इस समय मैक्सिको में स्व-निष्कासन में हैं । पुरस्कार के प्रशस्ति-पत्र में कहा गया है : सुश्री मेंचू अपने देश में, अमरीकी प्रायद्वीप की भूमि पर तथा विश्व में, जातीय, सांस्कृतिक और सामाजिक विभाजन रेखाओं को लांघकर शांति और सौहार्द के जीवंत प्रतीक के रूप में उभरकर सामने आयी हैं ।

सुश्री मेंचू का जन्म ३३ वर्ष पहले एक गरीब परिवार में हुआ था । यह परिवार तीन दशकों तक ग्वातेमाला में चलने वाले गृहयुद्ध में फंसा रहा । मध्य और दक्षिणी अमरीका के कई देशों की तरह ग्वातेमाला भी यूरोपीय आव्रजकों की संतानों और स्थानीय जन-साधारण के बीच चलने वाले तनावों को झेलता रहा । १९७० और १९८० के दशकों में यह तनाव अपने चरम तक पहुंच गया था, और परिणामस्वरूप वहां के मूल निवासियों को बड़े पैमाने पर दबाया गया । १९८० में होनेवाले जन-संहार में सुश्री मेंचू ने अपने पिता, माता और एक भाई को खो दिया । उनका संहार करने वाली वहां की सेना और वहां के अमीर ज़मींदार थे ।

सुश्री मेंचू की उम्र उस समय २० वर्ष थी, लेकिन उसी समय से उन्होंने यहां के मूल निवासियों के अधिकारों के मुद्दे को उठाया । स्वाभाविक ही था कि उनकी ग्वातेमाला के सैनिक अधिकारियों से मुठभेड़ होती । मजबूर होकर उन्हें छापामारों के तौर-तरीके अपनाने पड़े । दक्षिणपंथी सुरक्षा सेनाओं ने तब तक ५० हज़ार से अधिक ग्वातेमाला निवासियों को मौत के घाट उतार दिया था जिनमें अधिकांश वहां के मूल निवासी थे । अब तक, ३० वर्ष के इस संघर्ष में एक लाख २० हजार से ज़्यादा लोगों की जानें गयी हैं । कहा तो यही जाता है कि सुश्री मेंचू की गतिविधियों

से हिंसा का पूरी तरह बहिष्कार नहीं हो सका है, लेकिन उनकी नीतियां अपने में सौहार्द की भावना लिये रही हैं । कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि उनके कार्य-कलाप से मानव अधिकारों के विकास में शांतिपूर्ण ढंग से योग मिला है ।

नोबेल पुरस्कार कमेटी के एक प्रतिनिधि का कहना है कि सुश्री मेंचू को मिलने वाले इस पुरस्कार का एक असर यह होगा कि अमरीका की स्थानीय जनता और संसार के अन्य देशों के बीच बेहतर भावना पनपेगी ।

इत्तफाक से सुश्री मेंचू को यह पुरस्कार उस समय मिला है जब उत्तरी, मध्य और दक्षिणी अमरीका के देश आज से ठीक ५०० वर्ष पहले यूरोपीय नाविक क्रिस्तोफर कोलंबस के आगमन को उत्सव रूप में मना रहे हैं । तब से ही इस भूखंड का नाम अमरीका पड़ा ।

कोलंबस तो, दरअसल, भारत की खोज में निकला था और उसे यही लगा था कि वह भारत पहुंच गया है । इसीलिए उसे इस भूखंड पर जो भी लोग मिले, उन्हें उसने "भारतीय" ही कहा । लेकिन अब तो यह बात भी सामने आने लगी है कि कोलंबस ने भी अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए मूल निवासियों का संहार किया, और तभी से ये लोग किसी-न-किसी रूप में समय-समय पर, प्रताड़न और दमन के शिकार होते रहे हैं । जिस समय सुश्री मेंचू को इस पुरस्कार के बारे में पता चला, उन्होंने इस प्रकार टिप्पणी की : "उन लोगों की आवाज़ें, जो उस समय गुम हो गये या मार दिये गये, चिल्ला-चिल्ला कर न्याय की मांग कर रही हैं । हमें इस प्रकार नहीं रहना है गोया कि हम अतीत की थाती हैं । इतिहास के अभी कई और पन्ने लिखे जाने हैं ।"

संयुक्त राष्ट्र ने १९९३ को स्थानीय जन-साधारण का अंतर्राष्ट्रीय वर्ष नाम दिया है । सुश्री मेंचू स्थानीय जन-साधारण पर काम करने वाले संयुक्त राष्ट्र के कार्यकारी दल की सदस्या हैं । जब से नोबेल शांति पुरस्कार की स्थापना हुई है, तब से इस पुरस्कार को पानेवाली यह नौवीं महिला हैं । भारत की मदर टेरेसा को यह पुरस्कार १९८३ में मिला था ।

१९९२ के अन्य नोबेल पुरस्कार विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं: फ्रांस के जार्ज चारपक (भौतिकी), संयुक्त राज्य अमीरका के रुडोल्फ ए. मारकस (रसायन शास्त्र), अमरीका के प्रोफेसर एडमंड फिशर और डा. एड्विन क्रेब्स (चिकित्सा शास्त्र), प्रोफेसर गैरी एफ. बेकर, यू.एस.ए. (अर्थशास्त्र) तथा वेस्ट इंडीज़ के डेरेक वाल्कॉट (साहित्य) ।

कुरूप राजकुमारी

राजनंद गांव में प्रवीण नाम के एक युवक पर एकाएक विपत्ति टूट पड़ी । उसके माता-पिता की मृत्यु हो गयी और गांव में उसका अपना कहने लायक कोई न रहा । इसके साथ ही उसके पिता ने जो कर्ज़ उठाये थे, उन्हें चुकाने के लिए उसे सारी जायदाद बेचनी पड़ गयी । इसीलिए उसने लाचार होकर उस गांव को छोड़ने का फैसला कर लिया और एक दिन तड़के ही शहर के लिए निकल पड़ा ।

दोपहर होते-होते वह जंगल के बीचों-बीच एक टीले पर पहुंचा । वहां उसे एक झोंपड़ी दिखाई दी ।

झोंपड़ी में जगताई नाम की एक जादूगरनी रहती थी । वह पिछले पच्चीस वर्षों से उस झोंपड़ी में अकेली रह रही थी । प्रवीण ने वहां पहुंच कर ज़ोर-ज़ोर से तीन-चार बार पुकारा । गुस्से से जगताई बाहर आते ही फुंकारने लगी, "कौन हो तुम? मुझे इस तरह पुकारने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई?"

जादूगरनी जगताई के माथे पर एक बड़ी सी लाल बिंदी थी । गले में उसके तरह-तरह की मालाएं थीं और उसके बाल जटाएं बनकर बिखरे हुए थे । उसकी आखें बिल्ली की आंखों की तरह चमक रही थीं । उसकी आवाज़ बड़ी कर्कश थी । इस सब से प्रवीण कुछ-कुछ भयभीत हो गया । लेकिन फिर वह थोड़ा संभला और बोला, "अम्मा, बड़ी तेज धूप में चलकर आया हूं । थोड़ा पानी पिला सको तो बड़ी मेहरबानी होगी ।"

जगताई घूर-घूरकर प्रवीण की आरे देखते हुए बोली, "मुझे तूने अम्मा कहा? मुझे इस तरह के रिश्ते मंजूर नहीं । चल, तू प्यासा है न । आ, खाना भी खा ले । खाना खाकर आराम कर लेना और शाम को चले जाना ।" और यह कहकर बूढ़ी जादूगरनी

कामेश्वरी गुप्त

प्रवीण को अपनी झोंपड़ी के भीतर ले गयी ।

जगताई ने प्रवीण के सामने कई व्यंजन परोस दिये । प्रवीण उन्हें खाये जा रहा था और जगताई की तारीफों के पुल बांधे जा रहा था, ''ओह । तुम्हारा भी जवाब नहीं, अम्मा । क्या बढ़िया खाना बनाया है ।''

प्रवीण की प्रशंसा से जगताई फूल कर कुप्पा हो गयी । खाना खाकर आराम कर चुकने के बाद प्रवीण जब शाम को चलने के लिए तैयार हुआ तो जगताई ने पूछा, ''तुम राजधानी जा रहे हो? क्या तुम्हारी जान-पहचान का वहां कोई है? राह-खर्च के लिए क्या तुम्हारे पास काफी पैसे हैं?''

प्रवीण ने इन प्रश्नों का उत्तर न में दिया । इस पर जगताई जोर से हंसी और बोली, ''तुम्हारे भोलेपन के क्या कहने । जेब में पैसा नहीं, शहर में कोई जानता नहीं, और चले वहां काम ढूंढ़ने?''

प्रवीण को कुछ नहीं सूझा । इसलिए वह चुप हो गया । तब जगताई ने बड़े प्यार से कहा, ''सच कहने में कोई हर्ज़ नहीं । तुम्हारे चेहरे पर एक महाराजा की आभा झलक रही है ।''

''भगवान ने मुझे रूप तो ठीक-ठाक दिया; लेकिन मेरे ललाट पर वह रेखा नहीं बनायी जिससे मैं इतना बड़ा आदमी बन सकूं । अब तुम ही बताओ, अम्मा, मैं क्या करूं ।'' प्रवीण ने दु:ख-भरे स्वर में कहा ।

जगताई थोड़ी देर तक कुछ सोचती रही । फिर बोली, ''ठीक है, तुम चार दिन तक मेरे पास ही रहो । अम्मा कहकर तुमने मुझसे अपना रिश्ता जोड़ ही लिया है । मैं तुम्हारी इस राज्य की राजमुकारी से शादी करवाऊंगी ।''

जगताई को राजकुमारी के प्रति बहुत स्नेह था । महारानी को जब गर्भ था, तो वह महाराजा के साथ वन-विहार के लिए जंगल में आयी थी । उसी समय राजा के रथ पर एक चीता कूद पड़ा था । राजा ने उस चीते को मार तो दिया था, लेकिन रानी इतनी डर गयी थी कि वह बेहोश हो गयी थी । उसी समय उसे प्रसव की पीड़ा भी शुरू हो गयी । तब जगताई उसे अपनी झोंपड़ी के भीतर ले गयी और उसका प्रसव कराया । रानी ने जिस शिशु को जन्म दिया था, वह

एक कुरूप कन्या थी जिसे देखे बिना ही रानी की मृत्यु हो गयी थी ।

राजा यह नहीं चाहता था कि हर कोई उस कुरूप कन्या को देखे । इसलिए उसने अंतःपुर के एक भीतरी कक्ष में उसके पालन-पोषण की व्यवस्था की थी । वह कुरूप कन्या अब जवान हो चुकी थी । राजा को उसके विवाह की चिंता थी, क्योंकि उसका विवाह एक समस्या बन गया था ।

जगताई राजकुमारी के प्रति अपने स्नेह के कारण उसे आये दिन देखने जाती थी । एक दिन वह एक पिंजरे के साथ राजकुमारी को देखने गयी । पिंजरे में एक तोता था । राजा ने प्रश्न किया, "क्या बात है, जगताई? यह तोता कैसे अपने साथ लायी हो?"

"पिछली बार जब मैं आयी थी तो राजकुमारी ने एक तोते की मांग की थी, महाराज ।" जगताई ने झूठ बोल दिया ।

राजकुमारी ने जब पिंजरे में बंद तोते को देखा तो वह खुशी से उछल पड़ी और बोली, "मेरी अच्छी दादी मां । मैं इस तोते के लिए सोने का पिंजरा बनवाऊंगी ।"

"यह तोता आजादी के साथ जंगलों में रहता है । क्या वह तुम्हारे इस सोने के पिंजरे में हमेशा बंद रहना चाहेगा?" जगताई ने प्रश्न किया ।

"जंगल क्या होते हैं, दादी मां? वे कहां हैं?" राजकुमारी को कौतूहल हुआ ।

"मेरे साथ अगर तुम आओ तो मैं तुम्हें सब दिखा दूंगी । वहां अगर तुम से कोई पूछे तो कहना तुम मेरी पोती हो । अगर मैं तुम्हें यों ही अपने साथ ले जाऊं तो तुम्हारे पिताजी मेरा सर कटवाकर महल के द्वार पर लटकवा देंगे । मैं तुम्हें तोता बनाकर अपने साथ लिये चलती हूं । क्या तुम्हें यह मंजूर है?" जगताई ने पूछा ।

राजकुमारी इसके लिए खुशी-खुशी मान गयी । जगताई ने कोई मंत्र पढ़ा और राजकुमारी तोता बन गयी । अब उसने पिंजरे वाले तोते को तो आजाद कर दिया और उसकी जगह राजकुमारी को पिंजरे में बंद कर लिया ।

जब तक वह पिंजरे के साथ जंगल में अपनी झोंपड़ी के निकट पहुंची, तब तक शाम हो चुकी थी । बाहर खटिया पर प्रवीण

लेटा हुआ था । उसने जैसे ही पैरों की आहट सुनी, वह फौरन बोल उठा, ''कौन है वहां?''

''मै हूं रे । क्या मुझे देख नहीं पा रहे?'' हंसते हुए जगताई ने कहा ।

''अम्मा, जैसे ही तुमने झोंपड़ी से बाहर कदम रखा, मेरी आंखों की रोशनी गायब हो गयी । मैं [illegible] कुछ देख नहीं पा रहा हूं ।'' रोते हुए [illegible] ने कहा ।

जगताई ने उसकी पीठ थपथपा कर उसे सांत्वना दी और कहने लगी, ''चिंता मत करो, बेटे । तुम्हारी आंखों की रोशनी तुम्हें वापस मिल जायेगी । मैं अपनी पोती को अपने साथ लिवा लायी हूं । यह चिकित्सा जानती है । जल्दी ही यह तुम्हारी आखों की रोशनी वापस ले आयेगी ।''

जगताई ने अब कोई मंत्र पढ़ा, और साथ ही पिंजरे से तोते को बाहर निकाला । तोता तुरंत राजकुमारी बन गया । जगताई ने एक बर्तन में थोड़ी-सी दवा डाली और राजकुमारी से बोली, ''इस दवा का लेप तुम इसकी आंखों पर लगा दो । मुझे कोई दूसरा काम करना है ।'' और यह कहकर वह स्वयं झोंपड़ी से बाहर चली गयी ।

प्रवीण को देखकर राजकुमारी चकित रह गयी । वह काफी सुंदर था । लेकिन जहां वह उसके सौंदर्य पर चकित हुई, वहां उसे इस बात का दु:ख भी हुआ कि वह अंधा है । वह जब प्रवीण की आंखों पर दवा का लेप करने लगी तो प्रवीण ने उससे पूछा, ''तुम कौन हो?''

''मैं जगताई की पोती हूं ।'' राजकुमारी ने उत्तर दिया । ''तुम्हें इस लेप से कोई तकलीफ तो नहीं हो रही?''

''नहीं, ऐसा कुछ भी नहीं है ।'' प्रवीण ने उसका हाथ अपने हाथ में लेकर कहा ।

जगताई ने राजकुमारी को अब तक वह मंत्र सिखा दिया था जिससे वह जब चाहे तोता बन सकती थी, और जब चाहे तोते से राजकुमारी बन सकती थी । जैसे ही रात होने को हुई, राजकुमारी तुरंत तोता बन गयी और अपने अंत:पुर में जा पहुंची । अंत:पुर में पहुंचकर वह फिर से राजकुमारी बन गयी ।

अगले दिन दोहर के समय राजकुमारी झोंपड़ी में लौट आयी । आते ही उसने प्रवीण

की आंखों पर फिर दवा का लेप किया ।

इस तरह दस दिन बीत गये । अब प्रवीण को राजकुमारी पर इतना प्यार आने लगा था कि उसे लगने लगा वह जगताई की पोती के बिना सुख-चैन से रह नहीं सकेगा ।

एक रात उसने जगताई से कहा, "अम्मा, मेरी आंखों की रोशनी लौट आती है तो मुझे तुम्हारी पोती के प्रति सदा ऋणी रहना होगा । अगर वह मान जाती है तो मैं उसके साथ शादी करने को भी तैयार हूं ।"

"यह तुम क्या कह रहे हो, बेटे? मैं तो तुम्हारा विवाह राजकुमारी के साथ करवाना चाहती हूं ।" जगताई ने कहा ।

"मुझे कोई राजकुमारी वगैरा नहीं चाहिए अम्मा! अगर मैं शादी करूंगा तो केवल तुम्हारी पोती से ही ।" प्रवीण ने कहा ।

अगले दिन जब राजकुमारी वापस आयी तो उसने यह बात उससे भी कह दी । यह सुनकर राजकुमारी ने जगताई से कहा, "दादी मां, इतने सुंदर युवक के लिए क्या मेरे जैसी कुरूप लड़की उपयक्त होगी?" और साथ ही वह अपनी कुरूपता पर दुःखी होने लगी ।

"तुम्हें यही डर है न कि प्रवीण की आंखों की रोशनी वापस नहीं आयेगी?" जगताई ने प्रश्न करते हुए कहा ।

इस पर राजकुमारी तुरंत बोली, "ऐसी बात नहीं, दादी मां । अगर उसकी आंखों में रोशनी न भी आयी तो क्या अंतर पड़ेगा । मैं तो अच्छी तरह देख ही सकती हूं । मैं

उसकी आंखें बन जाऊंगी ।"

राजकुमारी के मुंह से ऐसे शब्द सुनकर जगताई बहुत खुश हुई । उसने कहा, "जब तुम एक-दूसरे को इतना चाहते हो, तब यह लुका-छिपी का खेल क्यों । तुम शायद जानती नहीं कि तुम्हारे पिता जी किसी भी ऐसे युवक से तुम्हारी शादी कर देना चाहते हैं जो तुम्हें पसंद करे । लेकिन चिंता मत करो । प्रवीण की आंखें भी जल्दी ही ठीक हो जायेंगी ।"

जगताई से आश्वासन पाकर राजकुमारी खुशी-खुशी महल को लौट गयी ।

दूसरे दिन जब वह महल से वापस आयी तो जगताई ने प्रवीण से कहा, "बेटे । मेरी पोती आयी है । मैंने विवाह का मुहूर्त भी

निकलवा लिया है । अब तुम एक बार अपने होने वाली पत्नी को देख लो ।" और यह कहकर जगताई ने कोई मंत्र पढ़ा और प्रवीण की आंखों पर अपना हाथ फिराया ।

प्रवीण ने जैसे ही अपनी आंखें खोलीं, वह ख़ुशी से उछल पड़ा, "अब मैं सब कुछ देख सकता हूं, अम्मा ।" वह चिल्लाया । फिर उसने अपनी बगल में बैठी उस युवती को देखा । वह इतनी कुरूप थी कि वह एकदम निराश हो गया, और उसी निराशा में उसने अपना सर ढुलका दिया ।

"क्या तुम्हें मेरी पोती पसंद नहीं आया?" जगताई ने पूछा ।

"नहीं, ऐसी बात नहीं, तुम्हारी पोती तो मेरे प्राण है । लेकिन उसका यह रूप... ।" प्रवीण कहते-कहते रुक गया ।

जगताई फौरन एक छोटा सा आइना उठा लायी और उसने उसे प्रवीण के हाथ में थमा दिया । आइने में प्रवीण को अपना रूप बड़ा ही बीभत्स दिखा । उसके मुंह से ज़ोर की एक चीख निकली ।

"बेटे, अब बोलो, क्या मेरी पोती से तुम्हारी जोड़ी ठीक बैठती है कि नहीं?" इसके साथ जगताई ज़ोर से हंस पड़ी ।

प्रवीण थोड़ी देर तक चुप रहा । फिर उसके मन में कोई विचार आया और वह बोला, "अम्मा, तुम ने मेरे भीतर की मूर्खता भगा दी है । मैं तुम्हारी पोती के साथ सहर्ष विवाह करने को तैयार हूं ।" और यह कहते हुए उसने जगताई के हाथ से एक फूल-माला लेकर राजकुमारी के गले में डाल दी ।

आश्चर्य । दूसरे ही पल कुरूप राजकुमारी एक अदभुत सुंदरी बन गयी, और प्रवीण को भी अपना असली रूप मिल गया ।

जगताई ने जब राजा को समूचा विवरण सुनाया तो वह बहुत ख़ुश हुआ । उसे इस बात की विशेष ख़ुशी थी कि प्रवीण ने उसकी बेटी को उसकी कुरूपता में ही पसंद कर लिया था ।

कुछ समय पाकर प्रवीण उस राज्य का राजा बन गया और एक समर्थ राजा के नाते उसने अपना नाम भी कमाया ।

जादुई महल

९

[जादुई महल में महेंद्रनाथ की वहां के दरबान से फौरन दोस्ती हो गयी । वहां पहुंचने के एक दिन बाद यह नौजवान वहां के नौकरों में घुल-मिल जाता है और इधर-उधर कमरों में ताक-झांक करता है । उसका मित्र महल का दरबान उसके लिए एक अच्छी खबर लाता है कि उसे महल के दूसरे फाटक पर दरबान के रूप में रख लिया गया है ।—उस से आगे]

"विद्यावती को गये अब तो एक हफ्ता भी हो गया, स्वामी" रानी वज्रेश्वरी ने रोते हुए राजा वीरसिंह से कहा, "कहीं से क्या कोई खबर नहीं आयी?"

राजा की समझ में नहीं आ रहा था कि वह रानी को कैसे शांत करे । फिर भी वह बोला, "उग्रसेन ने समूचे राज्य में अपने आदमी भेज रखे हैं, रानी ! इनमें से कुछ लौट आये हैं । दूसरे अभी बाहर ही हैं । हमारी प्रजा में से भी कुछ लोग राजकुमारी की खोज में निकले हुए हैं । कोई न कोई तो कुछ-न-कुछ खबर लायेगा ही ।"

"हां, आप कह भी रहे थे कि एक युवक आप से आज्ञा लेने आया था," वज्रेश्वरी ने अपने पति को याद दिलाया । "उसकी क्या कोई खबर आयी?"

"अरे हां, वह महेंद्रनाथ!" वीरसेन ने कहा, "वह बड़ा बहादुर और साहसी दिखता

ज्योतिष अब क्या कहता है ।''

राज ज्योतिषी जब महल में पहुंचा तो वह अकेला नहीं था, उसके साथ एक युवक भी था । उसने आते ही उस अजनबी युवक का परिचय देते हुए कहा, ''यह मेरा एक शिष्य है मदन मोहन । यह कुछ खबर लाया है ।''

''क्या यह हमारी बेटी के बारे में कोई खबर लाया है, ज्योतिषी जी?'' रानी वज्रेश्वरी ने चिंतातुर स्वर में पूछा । ''मुझे आशा है वह बिलकुल ठीकठाक और सुरक्षित है ।''

अभी आचार्य वाचस्पति ने उत्तर दिया भी नहीं था कि उससे पहले वह युवक बोल पड़ा, ''एक तरह से यह खबर राजकुमारी के बारे में ही है, महारानी जी । पिछले कुछ दिनों से मैं जगह-जगह घूम रहा हूं, और अपनी कुछ शंकाएं दूर करने और ज्ञान की वृद्धि करने के लिए दूसरे ज्योतिषियों से भेंट कर रहा हूं । उनमें से मुझे एक-दो ने बताया कि आचार्य जगतपति ने उन्हें राजकुमारी की जन्मपत्री पर विचार करने के लिए बुलाया था । इससे पहले मैं अपने गुरु जी के निवास पर आचार्य जगतपति से मिल चुका हूं । इसलिए मैं इन्हें खबर देने आया ।''

''मुझे जगतपति से ऐसे व्यवहार की उम्मीद नहीं थी,'' आचार्य वाचस्पति ने अपनी निराशा जताते हुए कहा । ''राजकुमारी के लापता होने के तुरंत बाद उसका एकाएक ग़ायब हो जाना काफी

था । हो सकता है सबसे पहले वही कोई खबर लेकर आये ।''

''मुझे बस, यही चिंता खाये जा रही है कि कहीं कोई हमारी बेटी को राज्य से बाहर न ले गया हो!'' वज्रेश्वरी ने अपने मन की शंका प्रकट की ।

''इस संभावना पर भी विचार किया गया है, रानी'' वीरसेन ने उत्तर दिया । ''तुम्हारे भाई ने पड़ोस के राज्यों को भी सावधान कर दिया है । अगर वह वहां कहीं हुई, तो वे उसे ढूंढ निकालेंगे । उसका बुरा समय तो खत्म होने को ही है । इसलिए वह जल्दी ही लौटगी । कुछ दिनों से आचार्य वाचस्पति भी दिखाई नहीं दे रहे । मैं आज ही उन्हें बुलवाता हूं । फिर पता चलेगा कि उनका

परेशानी दे रहा है । मुझे तो यही सोच है कि उसे हुआ क्या, राजन् । मैंने विद्यावती की जन्मपत्री उसके साथ पूरी तरह से जांची थी । मुझे ऐसा कोई कारण नहीं दिखता कि वह वीरगिरि के दूसरे ज्योतिषियों के साथ उस पर विचार-विमर्श करे ।"

राजा वीरसेन अब तक चुपचाप सारी बातें सुन रहा था । वह एकाएक बोला, "ज्योतिषी जी, आप जगतपति को कब से जानते हैं? क्या वह ऐसा व्यक्ति है जिस पर भरोसा किया जा सके?"

ज्योतिषी वाचस्पति ने राजा वीरसेन से यूं कहा, "वह पहले मुझसे अक्सर मिलता रहता था । इसलिए उसके ज्ञान या उसकी नेकनीयती पर शक करने की मुझे कोई गुंजाइश नहीं दिखी । लेकिन जिस तरह वह ग़ायब हुआ है, उससे मुझे शक होने लगा है । यही प्रकट होता है कि वह मुझसे कुछ छिपाना चाहता है । मेरी चिंता है तो केवल यही । जब वह मुझसे मिलने आयेगा तो मैं किसी प्रकार की कोई आशंका नहीं जताऊंगा, बल्कि उसे सीधा यहां ले आऊंगा ।"

अपने शिष्य के साथ जब राज ज्योतिषी लौट गया तो राजा वीरसेन ने सेनापति उग्रसेन से बात की और उसे संक्षेप में वह सब कुछ बता दिया ।

"मुझे तो राजन्, जाने क्यों, शुरू से ही ऐसा लग रहा था कि आचार्य जगतपति से ही राजकुमारी के लापता होने का कुछ सुराग मिलेगा ।" उग्रसेन ने कहा, "उसने विद्यावती की जन्मपत्री में कुछ ज़रूरत से ज़्यादा ही रुचि दिखायी थी । मैंने जब जगतपति के ठिकाने का पता लगाना चाहा तो मेरे सामने कोई परिणाम नहीं आया । वह रहस्यमय व्यक्ति है ।

"क्या महेंद्रनाथ से कोई ख़बर आयी?" राजा ने उग्रसेन से पूछा ।

"नहीं, राजन्," सेनापति ने उत्तर दिया ।

"मैं कारण तो नहीं बता सकता, लेकिन मुझे उस में बहुत विश्वास है ।" राजा वीरसेन ने कहा । "भगवान करे उसे अपने प्रयास में सफलता मिले ।"

इधर महेंद्रनाथ को अपना काम बोझिल नहीं लगा था, हालांकि वह तमाम रात जागता

रहा था । फाटक के पास बैठने की जो जगह थी, वह पत्थर की थी । इसलिए थोड़ी देर तक ही उसे उस पर आराम मिला । फिर वह फाटक से उद्यान के बीच के रास्ते पर ऊपर-नीचे आता-जाता रहा ।

इधर का उद्यान सीढ़ीनुमा था, हालांकि दूसरी तरफ का उद्यान ऐसा नहीं था, और तभी वह मालिक को वहां देख पाया था । पहले उसे नीचे के कई कमरों में और ऊपर के केवल दो-एक कमरों में ही प्रकाश दिखाई दिया । ऊपर के कमरों में प्रकाश काफी देर तक रहा । एक कमरे में तो और भी देर तक रहा ।

दूसरे दिन सवेरे-उसका दरबान मित्र आया और वह महेंद्रनाथ को उस विशाल भवन के दूसरे कक्ष में लिवा ले गया । वहां एक कमरे में खाना परोसा जा रहा था ।

इतने में उसे एक बुढ़िया दिखाई दी । उसके साथ दो लड़कियां थीं । ये सब खाने की तश्तरियां लिये हुए थीं । बुढ़िया सफेद साड़ी पहने थी और उसी से अपना सर ढके हुए थी । लेकिन जिस तरह वह उन लड़कियों से बात कर रही थी, उससे यही लगा कि वह हुक्म दे रही है । लड़कियां एक जैसी, एक ही रंग की पोशाक पहने हुए थीं । उनके ज़ेवर भी एक जैसे थे । वे जुड़वा दिखाई देती थीं ।

अभी सूरज ढला भी नहीं था कि महेंद्रनाथ अपना काम संभालने चल पड़ा । उसने अपने मित्र का भी इंतज़ार नहीं किया और यह भी नहीं पूछा कि उसे काम कब शुरू कर देना चाहिए । दरअसल, उसका मित्र तमाम दिन अपने कमरे में आया ही नहीं था । केवल एक बार आया था, और जब उसने देखा था कि महेंद्रनाथ सो रहा है, तो वह बिना उसे जगाये वहां से लौट गया था ।

महेंद्रनाथ दूसरी तरफ के फाटक की तरफ बढ़ते हुए सोच रहा था कि हो सकता है उसे कोई टोके, क्योंकि वह था तो नया ही न यहां । उसे दो-एक नौकर मिले भी, लेकिन वे केवल मुस्कराकर वहां से निकल गये । उन्होंने उसे शायद दरबान के साथ देखा हो और उसे भी यहां का एक कर्मचारी समझ लिया हो ।

महेंद्रनाथ सीधे अपने फाटक पर पहुंच

गया । उसे याद था कि जिस समय वह फाटक की ओर बढ़ रहा था, उसने उद्यान में किसी को नहीं देखा था । अभी चारों ओर काफी रोशनी थी । अपनी बैठने वाली जगह से वह उस भवन को अच्छी तरह से देख नहीं सकता था । बस, ऊपर की सीढ़ियों का थोड़ा-सा हिस्सा ही उसे दिखाई देता था, हालांकि उसे एक समय ऐसे लगा जैसे कि ऊपर उद्यान में कुछ लोग बातचीत कर रहे हैं । वह अपनी जगह से उठा और उसी रास्ते पर थोड़ा आगे बढ़ा । तब उसने देखा कि वही बुढ़िया, जिसे उसने भोजन वाले कमरे में देखा था, एक युवती के साथ उद्यान में धीरे-धीरे टहल रही है, और युवती फूलों को बड़े प्यार से सहला रही है । लेकिन उसे यह देखकर हैरानी हुई कि यह युवती भी वैसी ही पोशाक और ज़ेवर पहने हुए थी जैसे कि उसने पहले उन लड़कियों को पहने देखा था । लेकिन यह युवती निश्चित रूप से पहले वाली उन दो लड़कियों की तुलना में कहीं अधिक आकर्षक थी ।

महेंद्रनाथ ने इस बात की पूरी सावधानी बरती कि उन दोनों में से उसे कोई देखे नहीं । वह उसी रास्ते पर ऊपर-नीचे इस प्रकार चलता रहा जैसे कि वह अपने काम में पूरा व्यस्त रहा हो । लेकिन जितनी बार वह ऊपर की ओर जाता, उन दोनों को चोर नज़र से एक बार देख ज़रूर लेता । लेकिन उसे अजीब बात यह लगी कि वे आपस में बातचीत नहीं कर रही थीं, बल्कि बुढ़िया तो ज़्यादातर बैठी ही रही और उस युवती की गतिविधियों पर आंख रखे रही । उसी

समय उसने यह भी देखा कि सुबह वाली दो लड़कियों में से एक वहां आयी है और बुढ़िया को कुछ बता रही है । बुढ़िया उस लड़की को वहीं छोड़कर स्वयं भवन के भीतर चली गयी । लेकिन जाने से पहले उसने उस युवती से कोई बात नहीं की ।

लेकिन महेंद्रनाथ को यह देखकर अचंभा नहीं हुआ कि वह लड़की और यह युवती भी जुड़वा ही दिख रही थीं ।

बुढ़िया जब चली गयी तो उस लड़की ने युवती से कुछ बात करनी चाही, लेकिन युवती बात करने को उत्सुक नहीं थी । इसलिए उस लड़की ने युवती को अकेला ही पौधों और फूलों के बीच उनका आनंद लेने के लिए छोड़ दिया ।

अभी अंधेरा हुआ भी नहीं था कि लड़की उसे बरामदे की तरफ ले गयी और फिर दोनों ओझल हो गयीं । थोड़ी देर बाद ही महेंद्रनाथ ने ऊपर के एक कमरे में प्रकाश देखा । लेकिन यह वह कमरा नहीं था जिसमें उसने पिछली रात प्रकाश देखा था । उस कमरे में काफी देर तक प्रकाश रहा और फिर चारों तरफ अंधेरा छा गया ।

महेंद्रनाथ ने खाने के लिए अपने मित्र का इंतज़ार करते समय यह अनुमान लगाया कि यह युवती या तो मालिक की वह महत्वपूर्ण अतिथि है जिसका उसके मित्र ने ज़िक्र किया था, या उतनी ही कोई और महत्वपूर्ण अतिथि है, क्योंकि उसकी देख-रेख बहुत ही अच्छी तरह से की जा रही थी । बहरहाल, जिस वजह से वह चक्कर में पड़ गया था, वह थी उस युवती तथा उन दोनों लड़कियों की एक-सी आकृति । यदि वह उनके निकट भी जाये तो क्या वह उनके बीच भेद कर पायेगा?

अभी वह अपनी उधेड़बुन में ही था कि उसका दरबान मित्र खाना लेकर आ पहुंचा । महेंद्रनाथ ने तब तक यह निश्चय कर लिया था कि उसने जो कुछ भी देखा है, उसे वह अपने तक ही रखेगा और ऐसा ही दिखावा करेगा जैसे कि सब कुछ सामान्य है ।

"यह जगह तो बहुत ही शांत है । क्या मालिक चले गये हैं?" महेंद्रनाथ ने ऐसे ही बात बनाने के लिए अपने मित्र से पूछ लिया ।

"नहीं, नहीं ।" दरबान ने उत्तर दिया ।

"वह तो पूरी तरह यहीं है । पता चला है कि वह उन पंडितों के साथ व्यस्त हैं जो उनके साथ यहां आये थे । हो सकता है वह इधर आये ही नहीं । लेकिन बेहतर यही होगा कि तुम सावधान रहो ।"

"क्या उन्हें पता है कि मैं यहां काम पर हूं?" महेंद्रनाथ ने जानना चाहा ।

"हां, जैसे ही मैंने उन्हें बताया कि एक काफी तगड़ा नौजवान काम की तलाश में आया है," दरबान ने अपनी बात स्पष्ट की, "उन्होंने मुझ से तुरंत उसे रख लेने केलिए कहा । जब से उनका मेहमान यहां रहने आया है, मैं ही यहां काम कर रहा था । दूसरे फाटक पर एक दूसरा आदमी था । परसों की ही बात है कि वह आदमी एकाएक बीमार पड़ गया और मुझे वहां काम करना पड़ा, और इतने में तुमने सांकल बजा दी । सौभाग्य से मैं उस समय वहीं था जब रात को मालिक आये । क्योंकि पंडित उनके साथ थे, इसलिए उन्होंने किसी तरह की पूछताछ नहीं की । तब यह पता चला है कि उनकी मेहमान किसी दूर देश की राजकुमारी है । जब तक उसका बुरा समय बीत नहीं जाता, वह शायद यहीं रहेगी ।"

अपने मित्र की बात सुनकर महेंद्रनाथ के कान खड़े हो गये । जो कुछ उसने उसे बताया था, उसे वह फिर से याद करने लगा । उसने इस बात की सावधानी बरती कि उसके मित्र को किसी प्रकार यह संकेत न मिले कि उसकी उस विशेष अतिथि में रुचि है । उसने अपने मित्र से केवल इतना ही कहा, "हां, जब मालिक इधर आयें तो मुझे ज़्यादा सावधान रहना चाहिए ।"

दरबान को लौटे काफी देर हो गयी थी । महेंद्रनाथ को अब विश्वास हो गया था कि हर कोई सो गया है । वह चुपके-चुपके उद्यान की ओर गया ताकि वह वहां के दरवाजे, चारों तरफ के बरामदे और ऊपर जानेवाली सीढ़ियों को नज़दीक से देख सके ।

दरवाजा बंद था, और बरामदे में खुलने वाली सब खिड़कियां भी बंद थीं । सिर्फ ऊपर की कुछ खिड़कियां खुली थीं । लेकिन कहीं भी कोई दिखाई नहीं दे रहा था ।

महेंद्रनाथ ने अब निर्णय लिया कि वह समय की प्रतीक्षा करेगा, और वह अपनी जगह पर लौट गया । (जारी)
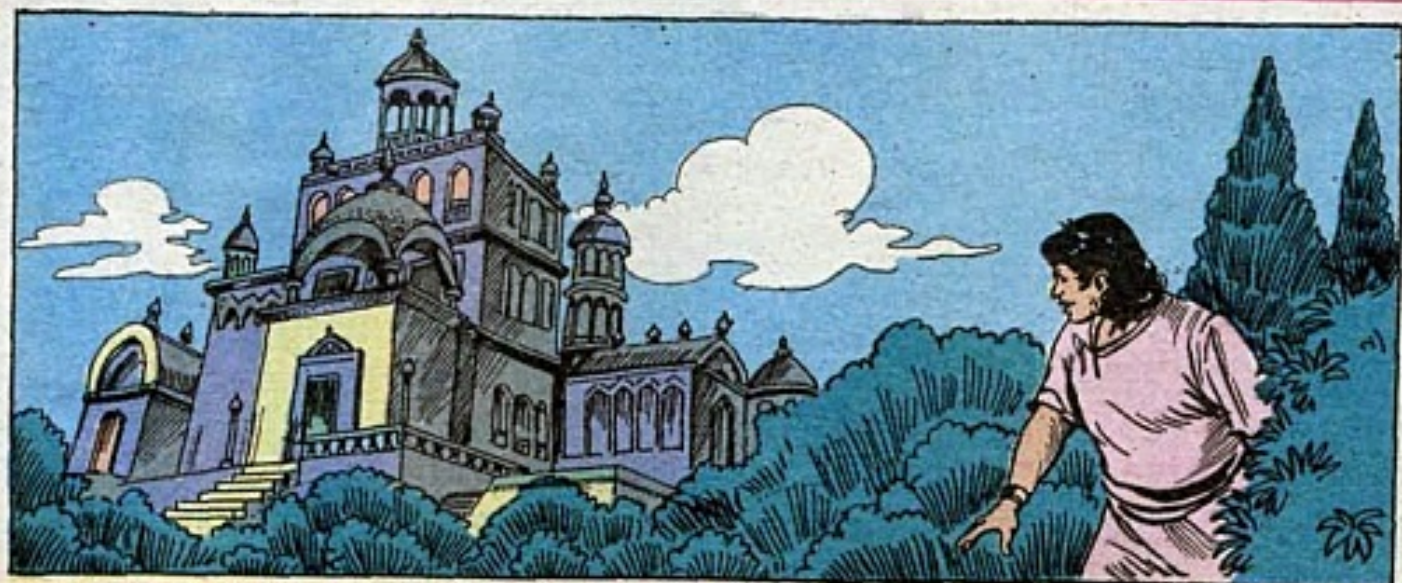
सूर्यमुखी का कौशल

अपनी धुन का पक्का राजा विक्रम श्मशान में फिर उस पेड़ के पास गया, पेड़ की शाखा से लटकती लाश को उतार कर उसने अपने कंधे पर डाला और हमेशा की तरह मौन साधे श्मशान को पार करने लगा । तब उस लाश में मौजूद बैताल बोला, ''हे राजन्, बार-बार पराजित होने के बावजूद आप इतनी निष्ठा से अपनी कार्यसिद्धि में जो लगे हुए हैं, वह बेशक सराहनीय है । लेकिन याद रखिए कि इस संसार में ऐसे लोगों की कमी नहीं जो अहंकार से ग्रस्त रहते हैं और अपना वचन पूरा करने पर ध्यान नहीं देते । कभी-कभी आप जैसे विवेकशील और निष्ठावान व्यक्ति भी चंचल स्वभाव वाले स्वार्थी लोगों के निर्णय के सामने झुक जाते हैं । अपनी बात स्पष्ट करने के लिए मैं आपको एक अहंकारी राजकुमारी और एक आत्मसम्मान खोकर बुद्धिविहीन हुए राजकुमार की कहानी सुनाता हूं, आप

बैताल कथाएं
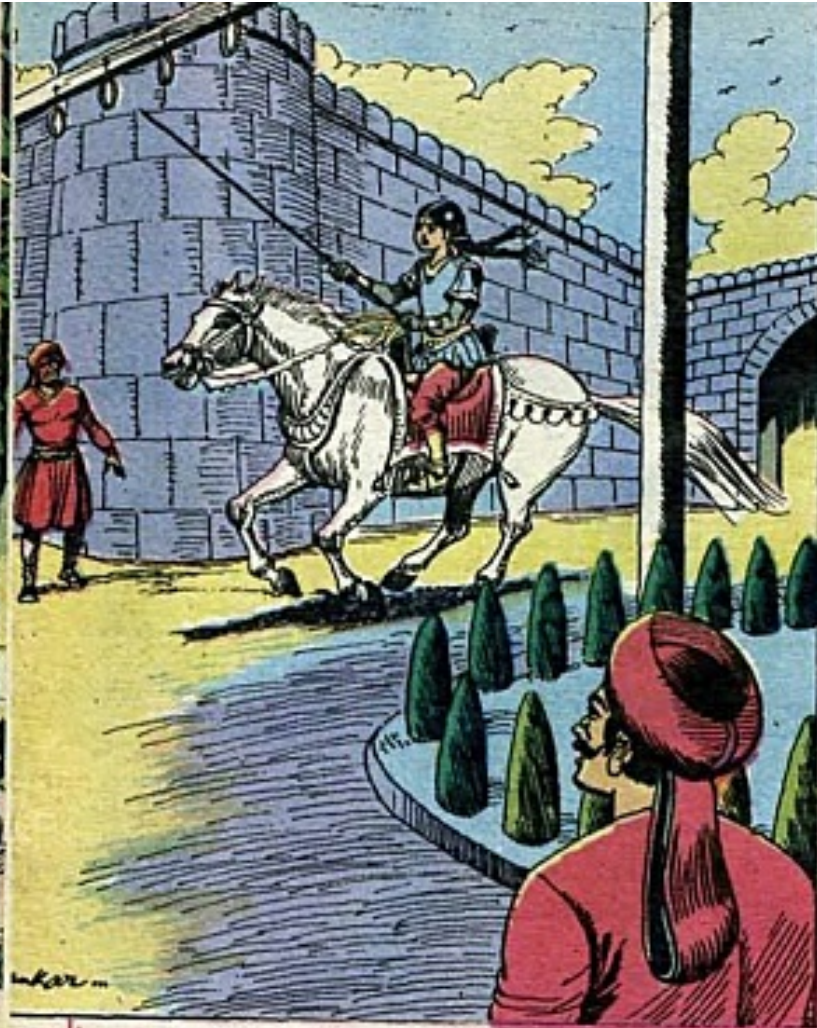
ज़रा ध्यान से सुनें ताकि आपका मन इस बोझ से हटा रहे और आपको थकान महसूस न हो ।" और यह कहकर बैताल वह कहानी सुनाने लगा ।

विजयपुरी का राजा शिवसेन महान् पराक्रमी और धर्मपालक था । उसकी पत्नी का नाम इंद्रावती था । काफी अरसे बाद उनके यहां एक बेटी हुई, जिसका नाम उन्होंने सूर्यमुखी रखा ।

सूर्यमुखी का पालन-पोषण बड़े लाड़-प्यार से हुआ । उसकी शिक्षा-दीक्षा का अच्छी तरह से प्रबंध कर दिया गया । पर सूर्यमुखी का मन शिक्षा की तुलना में युद्धविद्या में अधिक रमता था । इसीलिए राजगुरु ने उसके लिए ऐसे गुरु की व्यवस्था की जो युद्धकला में भी निपुण हो ।

जब सूर्यमुखी सात वर्ष की हुई तो वह घुड़सवारी, तलवार चलाने और भाला फेंकने में अद्‌भुत दक्ष हो गयी । तलवार चलाने की कला में तो वह इतनी दक्ष थी कि उसका गुरु भी उसे देखकर चकित रह जाता ।

सूर्यमुखी अब सोलह वर्ष की हो गयी थी । इसलिए उसकी मां इंद्रावती चाहने लगी कि योग्य वर ढूंढ़कर उसका विवाह कर दिया जाये । लेकिन शिवसेन की यह इच्छा थी कि उसकी बेटी सिंहासन पर बैठकर शासन की बागडोर संभाले, और उसके विवाह के बारे में बाद में सोचा जाये ।

सूर्यमुखी को जब पता चला कि उसके विवाह को लेकर उसके माता-पिता में मतभेद है, तो उसने एक दिन अपनी मां से कहा, "मां, मैं चाहती हूं कि कुछ समय के लिए देश का शासन मैं संभालूं । विवाह मैं इसके बाद ही करूंगी ।"

सूर्यमुखी के प्रस्ताव पर उसकी मां ने कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की । उधर राजा शिवसेन ने शुभ मुहूर्त निकलवाकर अपनी बेटी का राजतिलक कर दिया । तब से सूर्यमुखी पूरे मनोयोग से शासन चलाने लगी । पहले राज्य में चोरियां और लूटपाट काफी होती थी । उन्हें रोकने में उसे सफलता प्राप्त हुई । साथ ही बेकार लोगों को काम मिला । उसने आलसी लोगों को भी नहीं बख्शा, और बड़ी सख़्ती से उनसे काम लिया गया । बूढ़ों और बच्चों के कल्याण के लिए

भी उसने कई योजनाएं चलायीं।

तब तक समर्थ शासक के रूप में सूर्यमुखी ने ख्याति पा ली थी। अपनी बेटी की इस ख्याति पर राजा शिवसेन आनंद-विभोर था। उसने एक दिन सूर्यमुखी से कहा, "बेटी, मेरे बेटा नहीं हुआ तो क्या हुआ। तुमने मेरे उस ग़म को भुला दिया है। अब तुम विवाह कर लो।"

पिता की बात सुनकर सूर्यमुखी बोली, "पिताजी, मैं आपकी इच्छा के अनुरूप ही चलूंगी। लेकिन मेरा अनुरोध है कि आप राज्य में चारों ओर यह खबर भिजवा दें कि जो युवक मुझे खड्गयुद्ध में हरायेगा, मैं उसी के साथ विवाह करूंगी।"

राजा शिवसेन ने मजबूर होकर समूचे राज्य में उसी प्रकार घोषणा करवा दी। अनेक युवकों का अनुमान था कि एक पुरुष के मुकाबले पर एक स्त्री इस तरह के युद्ध में नाकाम ही रहेगी। लेकिन जब वे सूर्यमुखी के साथ खड्गयुद्ध के लिए वाकई मैदान में उतरे, तो सूर्यमुखी के हाथ देखकर वे दंग रह गये। कुछ युवक तो उससे भिड़े बिना ही लौट गये। सूर्यमुखी एक दिन में एक ही युवक से युद्ध करती थी।

होते-होते यह खबर पड़ोस के राज्यों तक भी पहुंच गयी। ऐसा ही एक राज्य था क्रांतिपुर, जहां का राजकुमार जयंत बुद्धिशील तो था ही, खड्गकला में भी प्रवीण था। वह एक साधारण व्यक्ति के वेश में विजयपुरी में आया और सूर्यमुखी की कला
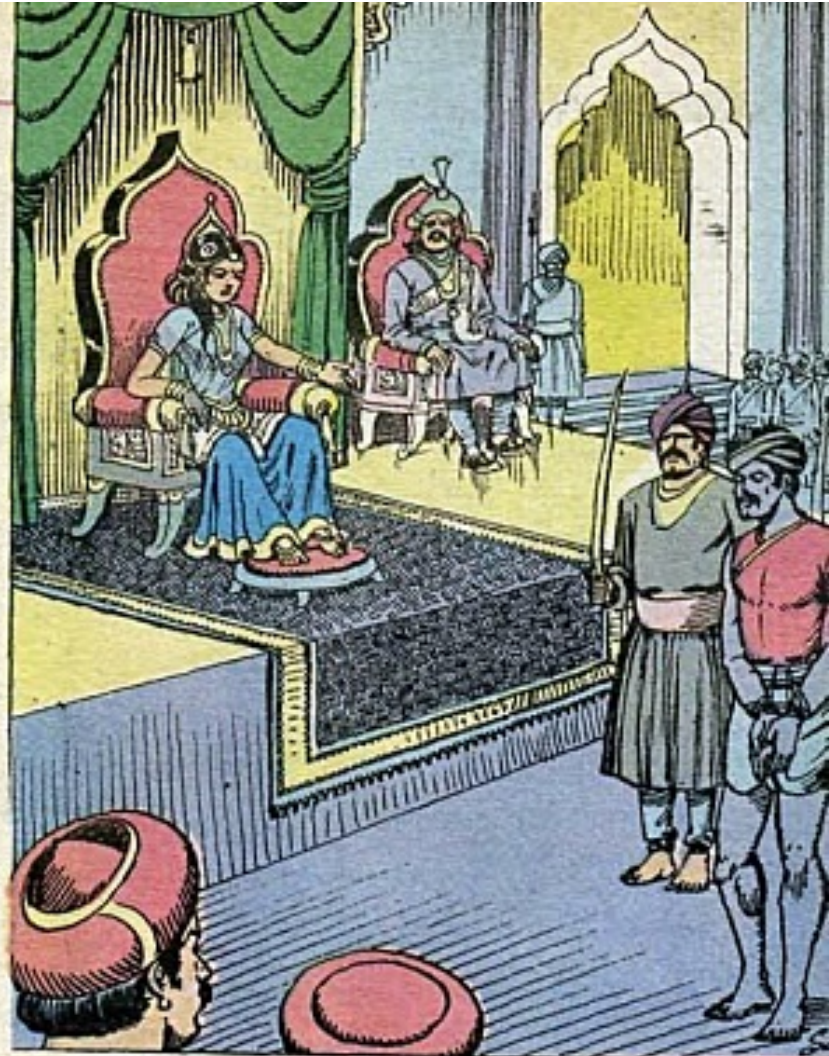
को बड़ी बारीकी से देखता रहा। जब-जब सूर्यमुखी ने अपने प्रतिद्वंद्वी को पराजित किया, उसने आनंद-विभोर होकर ज़ोर-ज़ोर से तालियां बजायीं। इससे सूर्यमुखी का ध्यान उसकी ओर गया और उसने साधारण वेशभूषा वाले जयंत के चेहरे की कांति को पहचाना।

जयंत सूर्यमुखी के अब सभी दांव-पेंच जान गया था। वह कुछ समय तक उनके बारे में सोचता रहा और फिर अपने राज्य को लौट गया। अपने राज्य में पहुंचकर उसने ऐसा अभ्यास करना शुरू किया जिससे वह सूर्यमुखी के हर दांव-पेंच को विफल कर दे। जैसे ही उसका अभ्यास पूरा हुआ, वह विजयपुरी में वापस आया।

जयंत और सूर्यमुखी के बीच जमकर युद्ध हुआ । थोड़ी ही देर में सूर्यमुखी जान गयी कि जयंत कोई साधारण खड्ग योद्धा नहीं है । अब उसने एक ऐसा दांव चला जिसका प्रयोग अभी तक नहीं हुआ था । उसकी कोशिश यह थी कि जयंत के हाथ से उसकी तलवार उछलकर दूर जा गिरे । लेकिन जयंत इस केलिए पहले से ही तैयार था । उसने सूर्यमुखी के दांव को समय पर रोका ही नहीं, बल्कि स्वयं एक ऐसा दांव चला जिससे सूर्यमुखी के हाथ की तलवार बड़ी तेज़ी से उसके हाथ से उछली और परे जा गिरी । अब तो चारों ओर जयंत के लिए हर्षनाद होने लगा ।

सूर्यमुखी ने जयंत की ओर ग़ौर से देखा । वह फौरन पहचान गयी कि साधारण वेशभूषा में दर्शकों के बीच बैठा युवक यही राजकुमार था जो हर बार उसकी विजय होने पर बड़े उत्साह से तालियां बजाने लगता था । वह अब जयंत की सफलता का रहस्य भी जान गयी थी । जयंत के विजयी होने के बावजूद उसने उससे विवाह करने से इनकार कर दिया और बोली, "ऐ राजकुमार, तुमने मुझे खड्ग युद्ध में हराया । इसके लिए मैं तुम्हें बधाई देती हूं । लेकिन मैं तुमसे विवाह नहीं कर सकती, क्योंकि यह विवाह धर्मसम्मत नहीं होगा ।"

सूर्यमुखी की बात सुनकर पल भर के लिए तो जयंत भौचक रह गया । फिर उसने बस, इतना ही कहा, "हां, तुम ठीक कह रही हो । मैं अब जाना चाहूंगा । आशा है मुझे तुम्हारी आज्ञा है ।" और इन शब्दों के साथ वह वहां से चल दिया । चलते समय उसने सूर्यमुखी का अभिवादन भी किया ।

बैताल ने यह कहानी सुनाकर कहा, "हे राजन्! सूर्यमुखी ने यह तो घोषणा करवा दी कि खड्गयुद्ध में उसे जो हरायेगा, उसके साथ वह विवाह करेगी । लेकिन जब जयंत ने उस पर विजय प्राप्त की तो उसने उससे विवाह करने से इनकार कर दिया । ऐसा क्यों? इसे क्या सूर्यमुखी का अहंकार नहीं कहा जायेगा? वह अपने वचन से मुकर गयी, और उसने ईमानदारी का दामन भी छोड़ दिया । इसे हम क्या कहें? उसके व्यवहार में यहां तक असंबद्धता है कि राजकुमार जयंत

के विजयी होने पर उसने उसे बधाई भी दी । उधर जयंत को देखिए । लगता है जैसे कि उसमें आत्मसम्मान की भावना पूरी तरह से ग़ायब है । और तो और, उसने सारे मामले में पूरी बुद्धिहीनता दिखायी । अपने वादे को पूरा न करने वाली राजकुमारी के प्रति उसने ज़रा भी क्रोध नहीं दिखाया, बल्कि उसकी असंबद्धता का उसने समर्थन किया और वहां से लौट गया । क्या यह सब विचित्र नहीं लगता? इन तमाम शंकाओं का समाधान जानते हुए भी यदि आप इनके बारे में कुछ नहीं बोलेंगे तो आपका सर फट जायेगा ।"

राजा विक्रम को अब बोलना ही पड़ा । उसने कहा, "जयंत ने अन्य युवकों की तरह फौरन खड्ग युद्ध नहीं किया, बल्कि पहले छद्मवेश में आकर राजकुमारी के खड्ग-कौशल को ग़ौर से देखा । एक तरह से तो यह गुरु-शिष्य का रिश्ता हो गया । प्रत्यक्ष रूप से न सही, परोक्ष रूप से सूर्यमुखी जयंत की गुरु ही कहलायेगी । इसलिए दोनों के बीच विवाह धर्मसम्मत नहीं रह गया था । इसी कारण सूर्यमुखी ने जयंत से विवाह करने से इनकार कर दिया । यदि उसने जयंत को उसकी विजय पर बधाई दी तो वह केवल एक गुरु का शिष्य की प्रशंसा करना था । जयंत भी यह तथ्य जान गया था । इसलिए उसे बुद्धिविहीन कहना न्यायसंगत नहीं होगा । वह तो बल्कि, बहुत ही कुशाग्रबुद्धि था । इसीलिए जाते समय उसने सूर्यमुखी का वैसे ही अभिवादन किया जैसे कोई अपने गुरु का करता है । इस सबसे यह स्पष्ट हो जाता है कि न सूर्यमुखी अहंकारी थी और न ही जयंत बुद्धिविहीन था । उनके बारे में ऐसी धारणा रखना सरासर गलत होगा ।"

राजा विक्रम का मौन तो अब भंग हो ही गया था । इसलिए बैताल लाश समेत वहां से ग़ायब हो गया और फिर पहले की तरह पेड़ की उसी शाखा से जाकर लटकने लगा । —(कल्पित)

(आधार: एन.आर. शिवनागेश की रचना)

दाने-दाने पर मोहर

एक दिन सोमपुर नाम के गांव का पटवारी और उसका सहायक, करमू, खेत से लौट रहे थे। जब वे राम मंदिर के निकट पहुंचे, तो उन्हें वहां एक ब्राह्मण मिला।

ब्राह्मण ने पटवारी को नमस्कार किया और बोला, ''मैं इस गांव के लिए नया हूं, पटवारी जी। बहुत दूर से यहां चौधरी के घर में शादी करवाने आया हूं। लेकिन मेरे लिए अभी रहने का प्रबंध नहीं हुआ। यदि आपके यहां रहने और थोड़ा-सा भोजन पाने की व्यवस्था हो जाये तो मैं अपना काम इत्मीनान से पूरा करके चला जाऊंगा।''

पटवारी ने उस ब्राह्मण की ओर बड़े गौर से देखा और बोला, ''बुजुर्गों का कहना है कि दाने-दाने पर खाने वाले का नाम लिखा रहता है। लगता है मेरे घर के कुछ दानों पर आपका नाम लिखा है। चलिए, आप मेरे साथ। आपको अपने यहां अतिथि बनाकर मैं अपना परम सौभाग्य समझूंगा।''

''आप सचमुच धर्मात्मा हैं।'' ब्राह्मण ने पटवारी की प्रशंसा करते हुए कहा।

अब वे तीनों पटवारी के घर में पहुंचे। उस समय गांव के मंदिर का पुजारी भी मौजूद था। पटवारी से जब उसे उसके साथ आये ब्राह्मण के बारे में पता चला तो पुजारी उस ब्राह्मण से बातें करने में तल्लीन हो गया।

फिर पुजारी पटवारी से बोला, ''पटवारी जी, आपके साथ आया यह व्यक्ति मेरा दूर का रिश्तेदार है। इसे भोजन कराना मेरा कर्तव्य बनता है। यदि आप बुरा न मानें तो मैं इसे अपने साथ ले जाना चाहूंगा।''

पटवारी ने इसके लिए सहमति दे दी और ब्राह्मण पुजारी के साथ चल दिया।

उनके वहां से चले जाने के बाद करमू ने पटवारी से कहा, ''मालिक, लगता है हमारे

उदयकुमार वर्मा

अनाज के दानों पर ही नहीं, पुजारी के अनाज के दानों पर ब्राह्मण का नाम लिखा है ।"

पटवारी को यह समझते देर नहीं लगी कि करमू की बात में कहीं व्यंग्य छिपा है । उसने हंसते हुए कहा, "देखो करमू, मैंने जो कुछ भी कहा था, ऐसे ही नहीं कहा था । तुम्हें उस पर किसी प्रकार का संदेह नहीं होना चाहिए, क्योंकि कभी-कभी हमारे सामने परोसा हुआ भोजन भी हमें खाने को नसीब नहीं होता । यदि इसे विस्तार से कहा जाये तो यह बात अनाज के दानों पर ही लागू नहीं होती, हर पदार्थ पर लागू होती है । ऐसी बातें केवल अनुभव के आधार पर ही समझ में आ सकती हैं ।"

करमू उस दिन देर रात तक पटवारी के यहां काम करता रहा और फिर वहां से अपने घर वापस चला गया । घर पहुंच कर उसने कुएं से पानी निकाला, उससे स्नान किया और भोजन करने के लिए भीतर आकार बैठ गया । उसके सामने खाना परोस दिया गया था । इतने में घर के बाहर से किसी ने उसे पुकारा । खीझ से भरकर वह बाहर आया । उसके पीछे-पीछे उसकी पत्नी भी चली आयी । इस बीच पिछले दरवाज़े से एक कुत्ता घर के भीतर घुस आया और करमू के लिए परोसे गये खाने को चट कर गया । करमू से पहले उसकी पत्नी घर के भीतर आयी और कुत्ते को दुतकारते हुए भगा दिया ।

अब करमू भी घर के भीतर लौट गया ।
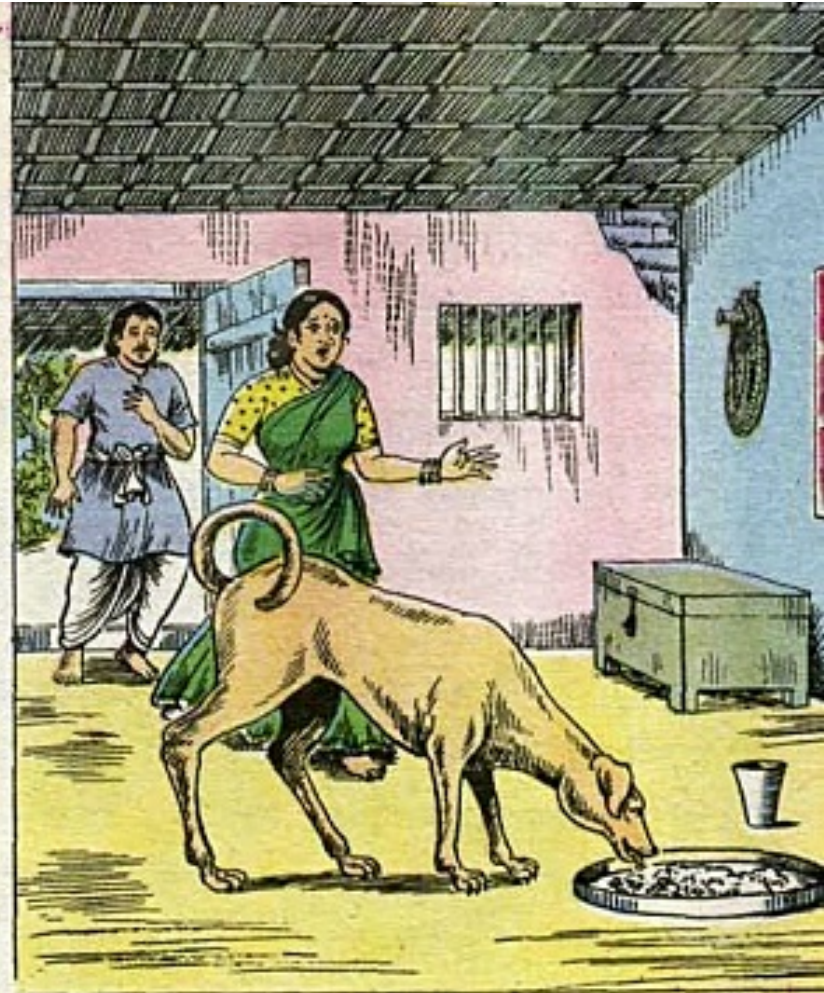
लेकिन घर के भीतर जो कुछ उसने देखा, उससे वह रत्तीभर भी विचलित नहीं हुआ, बल्कि कहने लगा, "ओह! जो पटवारी जी ने कहा था, आज वही सच हो गया । उन्होंने कहा था कि खाने वाले का दाने-दाने पर नाम लिखा रहता है । अब जिस भोजन को कुत्ता चट कर गया है, उस पर ज़रूर उसका नाम लिखा होगा । खैर, अब किया भी क्या जा सकता है? तुम फिर से खाना पका लो ।"

करमू की बात उसकी पत्नी को पसंद नहीं आयी । वह तैश में आकार बोली, "ये दार्शनिकता की बातें अब बंद करो । घर में चावल का एक दाना भी नहीं है । अब इस वक्त कौन धान कूटे और उससे चावल निकाले । मुझ में तो इतनी ताकत है नहीं ।

अच्छा यही होगा कि थोड़ा-सा पानी पिओ और सो जाओ ।"

पत्नी की बात सुनकर करमू ने ठंडी आह भरी और कहने लगा, "तब तो आज चावल के किसी भी दाने पर भगवान ने मेरा नाम नहीं लिखा । मैंने तो यह सब मज़ाक में कहा था और यह सब मुझ पर ही बीत गया । कल मैं पटवारी जी को इसके बारे मे ज़रूर बताऊंगा ।"

इतने में उसके घर के सामने एक बैलगाड़ी के रुकने की आवाज़ आयी । गाड़ी से करमू की सास और ससुर उत्तर रहे थे । उन्हें देखकर करमू हैरान रह गया । अब तो उनके लिए खाना बनाना ही पड़ेगा, जिसके लिए धान भी कूटना पड़ेगा । दिन-भर वह खेत में और पटवारी के यहां काम करता रहा था और उसके शरीर के पोर-पोर में थकान समा गयी थी । अब क्या करे वह?

सास-ससुर घर के भीतर आ गये थे । करमू ने उनसे दो टूक बात की और फिर अपनी खटिया पर जाकर लेट गया । वह ऐसी आवाज़ निकाल रहा था जैसे कि उसे बहुत सख्त दर्द हो रहा हो । लेकिन इतने में उसकी पत्नी वहां आयी और मुस्कराते हुए बोली, "उठो! अब मेरी समझ में आ गया है कि बुजुर्गों की बातें यों ही नहीं होतीं । पटवारी जी ने जो कहा था, वह गलत नहीं था । जब हमारे भाग्य में आज रात खाना खाना लिखा है, तो वह हमें मिलकर ही रहेगा, बल्कि वह हमें यहां ढूंढता हुआ पहुंचेगा । मेरी मां और पताजी शिवजी के विशेषक्षेत्र, श्रीशैल में पूजा करवाकर वहां से लौट रहे हैं । उनके साथ प्रसाद के रूप में कई मीठे पकवान हैं । चलो, पेट भर खा लो ।"

अब कहीं करमू की जान में जान आयी । प्रसाद को बड़ी श्रद्धा के साथ खाते हुए उसने कहा, "न जाने यह धान कहां उपजा था, हे भगवान् । लेकिन अब यह हमारे मुंह में जा रहा है । अब मैं समझ गया कि तुम हर पदार्थ पर उसके इस्तेमाल करने वाले का नाम लिख देते हो ।" और यह कहकर उसने लंबी सांस ली ।
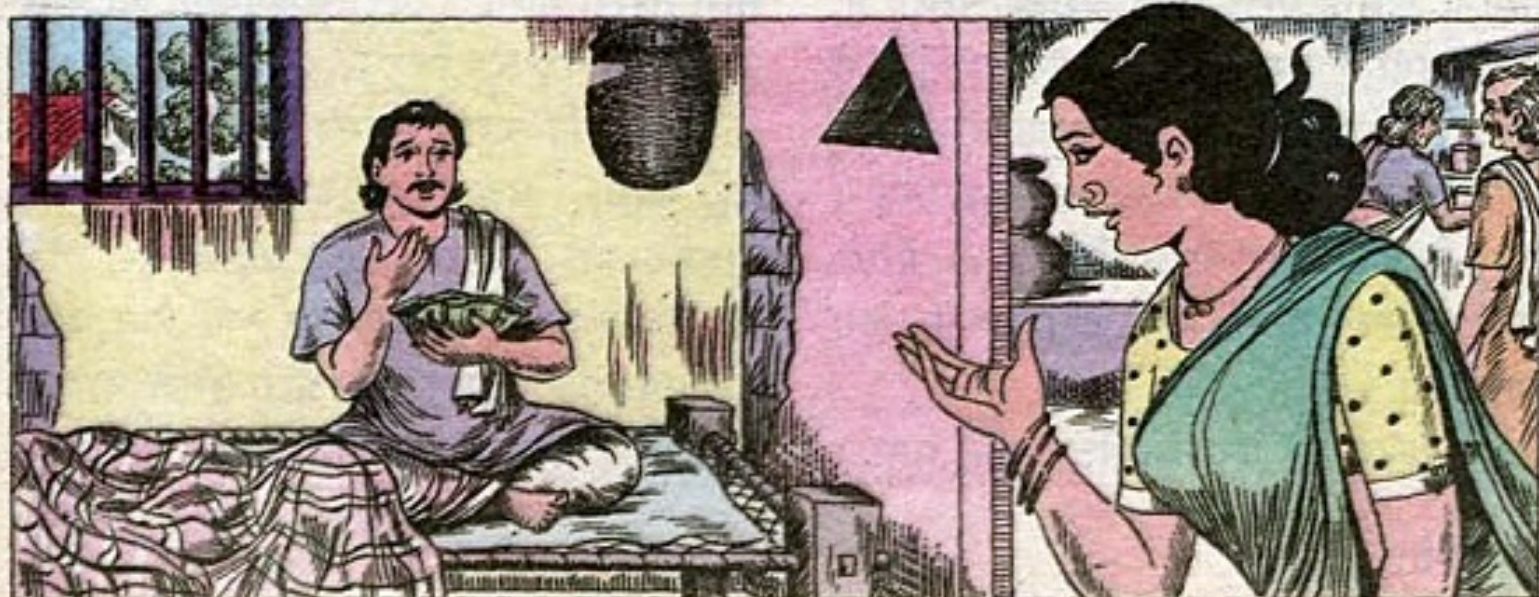
चन्दामामा परिशिष्ट-५०
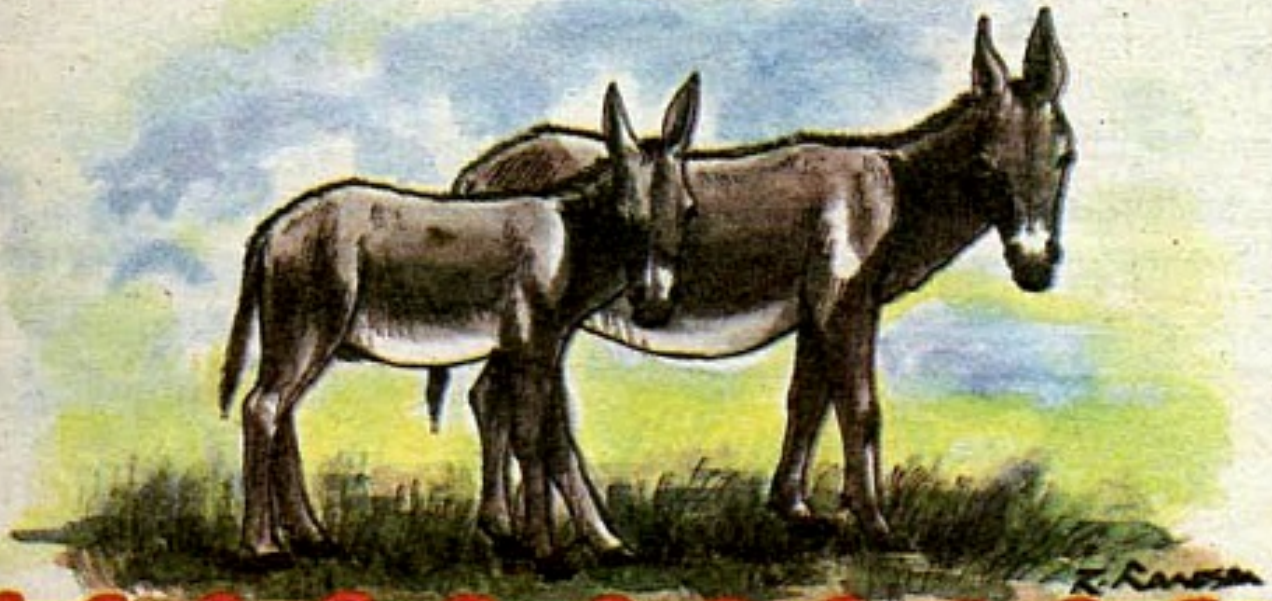
भारत के पशु-पक्षी

घोड़े की समझ रखने वाले गधे

जिस समय बच्चे कुछ नासमझी करने पर उतर आयें तो बड़े आम तौर पर उन्हें डांटते हुए यही कहते सुनाई देंगे: "गधे मत बनो!" यह मुहावरा अब बराबर इस्तेमाल होता है, लेकिन इस उक्ति में कोई दम नहीं है, क्योंकि गधे नासमझ नहीं होते । उनकी गिनती तो बल्कि, सबसे समझदार जीवों में होती है । अगर तुम एक गधे को अपने घर में पालतू बना कर रखो (लेकिन तुम रखोगे नहीं, क्योंकि तुम्हें अपने पड़ोसियों का डर होगा।)तो तुम पाओगे कि यह जीव तुम्हारे हर इशारे को बड़ी खूबी से समझता है । दरअसल, गधा है तो घोड़े की ही जाति का । इसलिए इसमें घोड़े की समझ की कमी नहीं होती, हालांकि यह इंसानों से कुछ-कुछ घबराता रहता है ।

जंगली गधा भारत में ही पाया जाता है और यह ज़्यादातर गुजरात के कच्छ के रन में देखने को मिलता है । कच्छ का रन एक हज़ार वर्ग मील में फैला नमक का रेगिस्तान है । पुराने समय में यह जीव फारस (अब ईरान) तथा सीरिय में तक पाया जाता था । लेकिन वहां अब इसका नामों-निशान नहीं है ।

एशियाई जंगली गधे का कद चार फुट (११०-१२० सें.मी.) होता है, और इसका रंग हलका पीला या भूरा-लाल-पीला होता है । इसकी गर्दन के नीचे के बाल सीधे और काले-भूरे रंग के होते हैं जो कि इसकी पीठ और दुम तक चले जाते हैं । निचला हिस्सा सफेद होता है । आम गधों की अपेक्षा इनके कान छोटे होते हैं और आम गधा इनसे कद में छोटा होता है ।

कश्मीर के लददाख क्षेत्र में तिब्बती जंगली गधा पाया जाता है जो कि लाल-भूरे रंग का होता है । जंगली गधा आदमियों से काफी घबराता है और जब कोई इसके पास जाने की कोशिश करे, यह लगभग ५५ कि.मी. प्रति घंटे की रफ़्तार से भों-चूं भों-चूं करता हुआ सरपट दौड़ लगाता है, मानो कह रहा हो, "देखा, मैंने तुम्हें गधा बना दिया!"

आज का भारत: साहित्य-दर्पण में

कर्नाटका में अग्रहार रूढ़िवादी ब्राह्मणों का गांव माना जाता है । ऐसे ही अग्रहार का एक ब्राह्मण है प्राणेशाचार्य । वह कड़ा नैतिकतावादी है और प्राचीन ग्रंथों का पोषक है ।

उसकी पत्नी को लकवा मार गया है । वह उसकी पूरी तन्मयता से देखभाल करता है ।

उसके विपरीत वहां नारनप्पा है जिसने ब्राह्मणोचित सद्व्यवहार की सभी सीमाएं तोड़ दी हैं । वह शराब पीता है, मांस खाता है और किसी की इज़्जत नहीं करता । उसकी एक रखैल है जिसका नाम चंदरी है । वह काफी सुंदर है ।

'संस्कार' : परंपरा बनाम भावावेश की गाथा
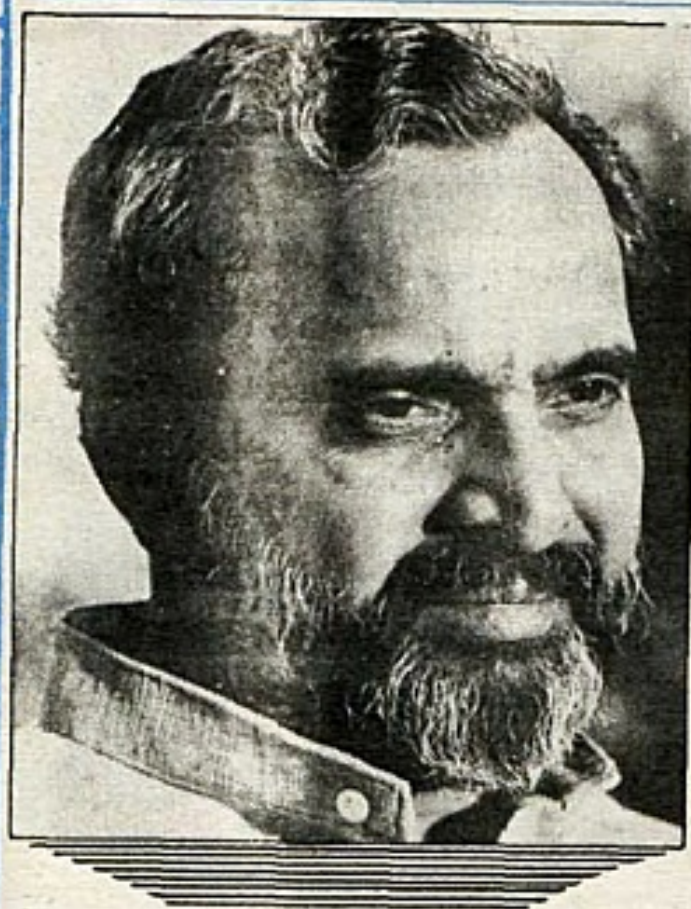
नारनप्पा की एकाएक मृत्यु हो जाती है । चंदरी प्राणेशाचार्य को यह खबर देती है और उससे नारनप्पा की अंत्येष्टि करने की व्यवस्था करने के लिए अनुरोध करती है । अब एक सवाल मुंह बाये खड़ा हो जाता है । नारनप्पा समाज से एक प्रकार से बहिष्कृत था । क्या ब्राह्मणों के लिए यह उचित होगा कि वे उसकी लाश को छुएं और दिवंगत ब्राह्मण का अंतिम संस्कार करें?

चंदरी अपने सारे ज़ेवर ब्राह्मणों के सामने रख देती है ताकि मृत शरीर की अवहेलना न हो । लेकिन ब्राह्मण पसोपेश में हैं । प्राणेशाचार्य प्राचीन ग्रंथों का अध्ययन करके इस समस्या का समाधान पाना चाहता है, लेकिन उसे कोई समाधान नहीं मिलता । वह चंदरी से कहता है कि वह अपने ज़ेवर उठा ले जाये । फिर वह मारुति (हनुमान) मंदिर में जाता है और वहां मार्गदर्शन के लिए प्रार्थना करता है, लेकिन उसे मार्गदर्शन नहीं मिलता । पर जिस समय वह घर लौट रहा

होता है, उसकी भेंट चंदरी से होती है। वह उसका इंतज़ार कर रही थी। प्राणेशाचार्य को उसके प्रति पूरी सहानुभूति है और चंदरी के मन में प्राणेशाचार्य के लिए पूरा आदर है। वह जैसे ही उसके पांव की तरफ झुकती है, प्राणेशाचार्य उसे अपने आलिंगन में ले लेता है, और फिर अपने आपको उसके प्रेमपाश में जकड़ा पाता है।

इस घटना के बाद क्या वह अब भी अपने को नैतिक रूप से सदाचारी ब्राह्मण मान सकता है? नहीं, कदापि नहीं।

चंदरी की कोशिश बराबर जारी है कि किसी तरह नारनप्पा की लाश को ठिकाने लगाया जाये। वह किन्हीं नीची जाति के लोगों के पास जाती है और उन्हें पैसों का प्रलोभन देती है। लेकिन वे कुछ भी करने से इनकार कर देते हैं, क्योंकि उन्हें डर है कि उनके छूने से एक ब्राह्मण का शरीर भ्रष्ट हो जायेगा और परिणामस्वरूप उनके सर पाप चढ़ेगा।

चंदरी अब एक मुसलमान मित्र की सहायता लेती है और नारनप्पा के मृतशरीर को अग्नि के हवाले कर देती है। आखिर, कुछ ब्राह्मण भी उसका अंतिम संस्कार करने के लिए तैयार हो जाते हैं, लेकिन तब तक सब कुछ खत्म हो चुका होता है।

इधर प्राणेशाचार्य की पत्नी का देहांत हो जाता है। प्राणेशाचार्य अपना घर-बार छोड़कर यायावार बन जाता है, जैसे कि वह अपने पाप से भागना चाहता हो।

यू.आर. अनंतमूर्ति (जन्म १९३१) द्वारा रचित 'संस्कार' हमारे समय का एक अद्भुत कन्नड़ उपन्यास है। यह हमारे उन अंधविश्वासों का भंडाफोड़ करता है जिन्हें नैतिकता समझा जाता है। मानव-चरित्र यहां अपने नग्न रूप में सामने आया है। प्राणेशाचार्य का अपने रास्ते से भटक जाना परोक्ष रूप से यह संकेत देता है कि केवल बाहरी अनुशासन से किसी व्यक्ति की प्रकृति नहीं बदली जा सकती, इसके लिए व्यक्ति के भीतर आध्यात्मिक परिवर्तन होना ज़रूरी है।

क्या तुम जानते हो?

१. दक्षिण भारत में केवल एक ही ऐसा जैन मंदिर है जो चट्टान काटकर बनाया गया है । वह कौन-सा मंदिर है?
२. उड़न सांप का यह नाम कैसे पड़ा?
३. संसार का वह कौन-सा पौधा है जिसमें काफी ऊंचाई पर भी फूल लगते हैं?
४. रेफ्रिजरेटर का आविष्कार किसने किया?
५. भारत की एक नदी के चार अलग-अलग नाम हैं । वह नदी कौन-सी है और वे नाम क्या हैं?
६. वह पहला यूनानी कौन था जिसने पुस्तकों के लिए एक पुस्तकालय का निर्माण किया?
७. गुरु नानक का एक चेला उनके देशाटन के समय बराबर उनके साथ रहा, और जिस समय वह गाते थे, उस समय वह रबाब बजाता था । उसका नाम बताओ!
८. सांस लेने की औसत गति क्या है?
९. विंध्याचल के दक्षिण में सबसे ऊंची चोटी कौन-सी है?
१०. किस खेल में विजेता पीछे की ओर जाते हैं और हारने वाले आगे की ओर?

उत्तर

१. तमिलनाडु के पुदुकोट्टई जिले के सित्तनवासल में । इसका निर्माण १,४०० वर्ष पहले पल्लव राजा महेंद्रवर्मन-I ने करवाया था । वह जन्म से जैन था, लेकिन बाद में वह शैव हो गया ।
२. यह अपने शरीर को रिबन की तरह चपटा कर लेता है, और पेड़ों के बीच ग्लाइडर की तरह हवा में तैरता है ।
३. उत्तर प्रदेश के गढ़वाल पर्वतीय क्षेत्र में ६,४०० मीटर की ऊंचाई पर पाये जाने वाले इस पौधे का नाम इरमानिया हिमालयसिस है ।
४. म्यूनिख (जर्मनी) में रहने वाले कार्ले लिंडे तथा फ्राइड्रिख शिपर ने १८७० के दशक में अमोनिया-शीतित रेफ्रिजरेटर का आविष्कार किया है ।
५. ब्रह्मपुत्र । तिब्बत में इसे सांग-पो कहते हैं, अरुणाचल प्रदेश में दीवांग और सियोंग, तथा बंगलादेश में मेघना । यह मानससरोवर झील से निकलकर बंगाल की खाड़ी में गिरती है ।
६. यूरीपिडीज़ (ईसा पूर्व ४८० से ४०६)
७. मर्दाना । यह एक अफगान सरदार का मुसलमान सेवक था । गुरु नानक ने इस सरदार के यहां मुनीम का काम किया था । जब सरदार का देहांत हो गया तो मर्दाना गुरु नानक का चेला बन गया । उनका दूसरा चेला हिंदू था जिसका नाम बाला था ।
८. औसत गति १५ से १८ बार प्रति मिनट होती है जो कि उत्तेजना के समय या व्यायाम करते समय बढ़ जाती है ।
९. केरल के मालाबार क्षेत्र के पश्चिमी घाट में अनाई मुडी या हाथी चोटी । इसकी ऊंचाई २७०० मीटर है ।
१०. जूडो ।

कमाई वाली थैली

केशव और जानकी के एक ही संतान थी, और वह था उनका बेटा चंद्रसेन।

बुद्धिमान तो वह काफी था, लेकिन अव्वल दर्जे का आलसी भी था। इस वजह से हर तरफ उसकी बदनामी फैल रही थी।

इस बीच जानकी का निकट का एक रिश्तेदार उनके यहां आया। उसका नाम सूर्यदेव था। वह अपनी बेटी पार्वती का विवाह उसके साथ करना चाहता था। इसलिए दूसरे दिन उसने चंद्रसेन को अपने पास बैठाया और उसे कई तरह से समझाने की कोशिश करने लगा।

चंद्रसेन ने सूर्यदेव की बातें बड़े ध्यान से सुनीं और फिर बड़ी स्पष्टता से बोला, "मैं चाहता हूं कि जीवन में खूब धन कमाऊं और अपने माता-पिता के लिए हर तरह की सुख-सुविधा जुटाऊं।"

सूर्यदेव चंद्रसेन का उत्तर सुनकर चौंका। कहने लगा, "अभी क्या तुम्हें पैसे की कमी है? तुम्हारे पिता के पास लाखों की दौलत है। वह सब तुम्हारी ही होगी। जब मैं अपनी बेटी पार्वती की शादी तुम्हारे साथ करूंगा तो मेरी सारी संपत्ति भी तुम्हारी हो जायेगी, वह मेरी इकलौती संतान है।"

सूर्यदेव की बात सुनकर चंद्रसेन को थोड़ी देर के लिए कुछ नहीं सूझा। वह चुप रहा। फिर उसने अपने मन की बात प्रकट कर ही दी, "क्षमा कीजिए, मैं आपकी बेटी से शादी नहीं कर सकता, क्योंकि मैं रामराज की बेटी मालती से शादी करना चाहता हूं।"

रामराज उस गांव का बहुत बड़ा रईस था और उसकी बेटी मालती अपने सौंदर्य के लिए विख्यात थी, बल्कि कुछ लोग तो उसे सौदर्य की देवी कहते थे।

चंद्रसेन के मुंह से मालती का नाम सुनकर सूर्यदेव तो हैरान हुआ ही, चंद्रसेन के

लक्ष्मी गायत्री

रूप से जाता रहा । जब वह आखिरी बार उनके पास गया तो स्वामी जी ने उसे एक सफेद थैली दी और उससे बोले, ''इस थैली में हाथ डालकर देखो ।''

चंद्रसेन ने उस थैली में अपना हाथ डाला, और फिर उसे बाहर निकाला । उसे यह देखकर हैरानी हुई कि उसके हाथ में सोने के कुछ सिक्के थे । वह बहुत खुश हुआ और खुशी के उसी झोंके में बोला, ''स्वामी जी, आपने मुझे योग्य समझकर ही यह थैली मुझे दी है । क्या यह सही है?''

शिवानंद स्वामी को चंद्रसेन की बात पर हंसी आ गयी । उन्होंने कहा, ''अगर तुम ऐसा ही सोच रहे हो तो मुझे यह भी बता दो कि तुम्हारी वह योग्यता है क्या?''

चंद्रसेन ने बिना किसी संकोच के उत्तर दिया, ''क्या मेरी नेकी मेरी योग्यता नहीं?''

''तो तुम यह कहना चाहते हो कि संसार का हर नेक व्यक्ति बिना परिश्रम किये वैभव के लिए योग्य हो जाता है?'' स्वामी जी ने प्रश्न किया ।

उत्तर में चंद्रसेन बोला, ''नेकी के साथ-साथ सतर्कता और वीरता की भी आवश्यकता होती है । मैं इन सब के बल पर अपने परिवार को तो खुश रखूंगा ही, साथ ही राजा विक्रम की तरह, जिसके पास कामधेनु और कल्पवृक्ष रहते थे, मैं सामान्य जन की भी सेवा किया करूंगा ।''

शिवानंद स्वामी को चंद्रसेन की मासूमियत पर दया आ गयी । उन्होंने कहा,

माता-पिता भी हैरान रह गये । चंद्रसेन ने कहा, ''रामराज को मनाना मैं जानता हूं । इसके लिए मैं अपार धन-दौलत कमाऊंगा । कार्तिक के महीने में यहां महर्षि शिवानंद स्वामी पधारते हैं । मैं उनसे अनुरोध करूंगा कि वह मेरा भाग्य बांचें ।'' और यह कहकर चंद्रसेन वहां से चल दिया ।

गांव में शिवानंद स्वामी पधार चुके थे । चंद्रसेन ने उनसे भेंट की और अपने मन की इच्छा उनके सामने प्रकट की ।

शिवानंद स्वामी ने मुस्कराकर कहा, ''मैं एक सप्ताह तक यहीं हूं । तुम रोज़ मेरे पास आओ । तब मैं तुम्हें कुछ बताऊंगा ।''

एक सप्ताह भी बीत गया । चंद्रसेन शिवानंद स्वामी के पास हर रोज़, नियमित

"जब तुम अपनी तुलना राजा विक्रम से कर रहे हो तो उससे एकदम स्पष्ट हो जाता है कि तुम कितने अबोध हो । तुम्हारी बातों से मैंने जान लिया है कि तुम्हारे पास वह बुद्धि नहीं है जिससे ज्ञानार्जन किया जाता है । इसीलिए मैंने तुम्हें यह थैली दी है । मेरे हिसाब से तुम एक पखवाड़े के भीतर ही यह थैली मुझे लौटाने पर मजबूर हो जाओगे । उस समय मैं तुम्हें यहां से पचास कोस दूर शांतिवन में मिलूंगा ।"

अगले दिन यह बात सब को पता चल गयी कि चंद्रसेन को शिवानंद स्वामी से एक अद्भुत थैली प्राप्त हुई है । चंद्रसेन का एक मित्र कमलकांत तो यह सुनते ही उसके पास दौड़ा चला आया, और चंद्रसेन का यशोगान करते हुए बोला, "चंद्रसेन, मेरी पत्नी एक अरसे से मुझ से एक हीरों का हार मांग रही है । तुम मुझ पर कृपा करो और मेरी पत्नी की यह इच्छा पूरी करने में मेरी मदद करो ।"

कमलकांत के अलावा और भी कई लोग चंद्रसेन के पास आये और अपनी ज़रूरतें उसके सामने रखकर उससे पैसे की मांग करने लगे । मांगने वालों की यह संख्या दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही थी ।

इस सबके बावजूद, जैसा चंद्रसेन ने सोचा था, वैसा नहीं हुआ, यानी रामराज अपनी बेटी का रिश्ता लेकर उनके यहां नहीं आया । इस दृष्टि से चंद्रसेन को हताश ही होना पड़ा । उसने मजबूर होकर अपने दो प्रिय मित्रों, कमलकांत और नरसिंह, को रामराज के यहां भेजा ताकि वे उसके मन की बात उस तक पहुंचा दें ।

चंद्रसेन के मित्र रामराज के यहां गये, और वहां से लौट भी आये । रामराज ने उन्हें जो उत्तर दिया था, उससे चंद्रसेन की आंखें खुल गयीं । रामराज का कहना था, "मैं अपनी बेटी का विवाह किसी पैसे वाले के साथ करने की नहीं सोच रहा । मैं तो अपनी बेटी का रिश्ता किसी महान व्यक्ति के साथ करना चाहता हूं । पैसे की मेरे पास कोई कमी नहीं । बेशक, तुम्हारे मित्र के पास एकाएक काफी पैसा आ गया है, लेकिन मेरी नज़रों में वह कुछ भी नहीं । उसके पास अपना व्यक्तित्व कहां है? व्यक्तित्व

से ही किसी व्यक्ति को सही प्रतिष्ठा मिलती है । यदि कोई धन कमाना चाहता है तो उसे अपनी शारीरिक तथा मानसिक शक्ति के बलबूते पर कमाना चाहिए । ऐसे ही ऊपर से टपक पड़ने वाले धन से किसी का व्यक्तित्व नहीं बनता, महान बनना तो बहुत दूर की बात है । तुम लोग अपने मित्र को यह बात साफ-साफ बता दो ।''

रामराज का उत्तर पाकर चंद्रसेन के मन में हड़कंप मच गया । उसके पांव तले से ज़मीन खिसक गयी । पहली बार वह सच्चाई के रूबरू हुआ था और उसे कुछ सोचने पर मजबूर होना पड़ा था । उस रात उसने सपने में देखा कि उसके अपने लोग ही पैसे के लिए उसे परेशान किये दे रहे हैं, और वे, उसके इनकार करने पर, उससे मार-पीट करने पर भी उतारू हो गये हैं । वे, दरअसल, किसी न किसी तरह उससे उसकी थैली हथियाने की कोशिश में थे ।

सुबह जब चंद्रसेन की आंखें खुलीं तो वह लपककर अपनी मां के पास गया और बोला, ''मां, तुम जैसा कहोगी, मैं वैसा ही करूंगा । मैं पार्वती से ही शादी करूंगा । तुम इसके लिए प्रबंध करना शुरू करो । मैं अभी सीधे शिवानंद स्वामी के यहां शांतिवन जा रहा हूं, और उनके दर्शन करके लौटूंगा ।''

बेटे की बात सुनकर मां आश्चर्य में पड़ गयी । बोली, ''शांतिवन जाने की क्या आवश्यकता है, बेटा?''

''है मां, है ।'' चंद्रसेन ने गंभीरता से उत्तर दिया । ''किसी भी व्यक्ति के लिए केवल धन ही काफी नहीं, साथ-साथ सुख-शांति भी चाहिए । मैं स्वामी जी से ऐसी थैली के लिए ही याचना करूंगा । हां, एक बात मेरी समझ में और आयी है-ईश्वर ने 'दिमाग' नाम की थैली हमें पहले से ही दे रखी है । हमें इसका सही उपयोग करना आना चाहिए । मुझे अब स्वामी जी की इस थैली की ज़रूरत नहीं है । यह मैं उन्हें लौटा दूंगा । क्यों, क्या ख्याल है तुम्हारा? भविष्य में मैं ईश्वर द्वारा दी हुई इसी दिमाग रूपी थैली को उपयोग में लाऊंगा ।''

होशियार लड़की

एक ज़माने में वज्रदत्त नाम का एक राजा अपने राज्य की जनता का दुख-दर्द जानने के लिए छद्‌मवेश में घूमा करता था । उसके साथ सदा उसका मंत्री भी रहता था । मंत्री का नाम सुबुद्धि था ।

एक दिन राजा और मंत्री उसी प्रकार छद्‌मवेश में एक गांव में घूमने लगे । एक झोंपड़ी में से कुछ आवाजें सुनाई पड़ीं ।

पहले, आवाज़ पुरुष की आयी । वह कह रहा था, "मेरी कुछ समझ में नहीं आता कि मैं क्या करूं । अब तो ईश्वर ही तुम्हारी मां को बचायेगा ।"

राजा के कानों में जैसे ही यह आवाज पड़ी, वह फौरन अपने मंत्री के साथ उस झोंपड़ी में दाखिल हो गया । उसे भीतर एक आदमी उदासी से भरा बैठा दिखाई दिया । उसकी बेटी पास में बैठी रो रही थी । उस व्यक्ति की पत्नी बुरी तरह से कराहती हुई वहीं पड़ी हुई थी ।

राजा और मंत्री को देखकर वह व्यक्ति बड़े आदर के साथ उठ खड़ा हुआ ।

"इसे क्या कष्ट है, मुझे बताओ । हो सकता है मैं तुम्हारी कुछ मदद कर सकूं ।" छद्‌मवेश में राजा ने कहा ।

"श्रीमान, मेरी पत्नी बहुत बीमार है और उसके इलाज के लिए मेरे पास कुछ भी नहीं है । लेकिन अगर मुझे थोड़ा-सा कर्ज़ मिल जाता तो मैं इसका इलाज करवाता । मुझे कर्ज़ देने वाला कोई नहीं दिख रहा ।" उस व्यक्ति ने कहा ।

"वह रकम मैं तुम्हें दिये देता हूं । लेकिन तुम उसे लौटाओगे कैसे?" राजा ने पूछा ।

"मज़दूरी करके उसमें से कुछ बचाकर, एक ही महीने में कर्ज़ की पूरी रकम जुटा लूंगा ।" उस व्यक्ति ने बड़े विश्वास के साथ कहा ।

२५ वर्ष पूर्व चंदामामा में प्रकाशित कहानी

"तो ठीक है, यह रही तुम्हारी कर्ज़ की रकम ।" और इतना कहकर राजा ने अपने मंत्री के द्वारा बीस मोहरें उस व्यक्ति को दे दीं ।

वह व्यक्ति वाकई आश्चर्य से भर गया, वह एक बात पूछे बिना न रह सका, "मैं नहीं जानता कि आप कौन हैं, कहां रहते हैं, और कहां पर यह रकम आपको लौटानी होगी । मैं यह भी नहीं जानता कि आप कितना ब्याज लेंगे ।"

"ब्याज देने की ज़रूरत नहीं," छद्मवेश में राजा ने कहा, "लेकिन ठीक एक महीने के बाद मुझे यह रकम वापस मिल जानी चाहिए । अगली शुक्लचतुर्थी की शाम को हम गांव के बाहर गणेश मंदिर के पास मिलेंगे । वहीं तुम पैसा लेकर पहुंच जाना ।" राजा ने कहा और फिर वह अपने मंत्री के साथ वहां से लौट गया ।

उस व्यक्ति की हैरानी की कोई सीमा न थी । उसे लगा कि ईश्वर ही उस वेश में उसके यहां आया था । उसने तुरंत अपनी पत्नी के इलाज की व्यवस्था की और वह बहुत जल्दी स्वस्थ भी हो गयी ।

एक महीना ऐसे ही बीता। उस व्यक्ति के लिए कर्ज़ की पूरी रकम जुटा पाना संभव नहीं हो पा रहा था । कुछ कमी पड़ रही थी । इसीलिए वह नियत समय पर गणेश मंदिर के पास न पहुंच सका ।

पर जैसे ही वह अवधि समाप्त हुई, उसके दूसरे ही दिन यानी शुक्ल पंचमी की शाम को, राजा और उसका मंत्री उसी प्रकार छद्मवेश में उसकी झोंपड़ी के निकट चले आये और फिर मंत्री ने पुकार कर पूछा, "भीतर कोई है?"

मंत्री की आवाज़ सुनकर उस गरीब आदमी की बेटी बहर आयी और उन्हें देखकर बोली, "सब कुछ ठीक है । चारों ओर प्रकाश है । कहीं अंधकार नहीं है ।"

लड़की ने जो कहा था, वह राजा की समझ में नहीं आया । लेकिन लगा जैसे कि मंत्री की समझ में सब कुछ आ गया है ।

"तुम्हारे पिता कहां हैं?" मंत्री ने उससे प्रश्न किया ।

"ऊपर चढ़कर सूर्यभगवान की आंखें ढकने के लिए गये हैं ।" लड़की ने

उत्तर दिया ।

"तुम्हारी मां कहां है?" मंत्री ने एक और प्रश्न किया ।

"खंभे के पानी से पैसा चुनने गयी है ।" लड़की का उत्तर था ।

"तुम यहां क्या कर रही हो?" मंत्री ने एक बार फिर प्रश्न किया ।

"सोने से चांदी को निकालकर मैंने उसे आग पर रख दिया है । सब कुछ ढोने वाले बुद्धू के सामने कौर डालकर उसे चमका रही हूं ।" लड़की ने कहा ।

"क्या तुम्हारे पिता नहीं जानते कि हम आने वाले थे?" मंत्री का प्रश्न था ।

"जानते हैं, महोदय । दस और दस के मुंह में दो कम होने से वह मुंह खोलने से लजा रहे हैं । मुझसे उन्होंने यह बताने के लिए कहा कि वह हाथ दिखा देंगे, लेकिन आपको दस बार पलक झपकनी होगी ।" लड़की का उत्तर था ।

"क्या तुम जानती हो, बेटी, कि हम कौन हैं?" मंत्री का प्रश्न था ।

"हां महोदय, तीन क्षकार ।" लड़की ने सादर फिर उत्तर दिया ।

"अच्छा, अब तुम भीतर जाओ और अपना काम देखो," मंत्री ने उससे कहा और राजा को इशारा किया कि वह भी वहां से चल दें ।

वहां से जब वे लौट रहे थे तो राजा ने मंत्री से पूछा, "उस लड़की की कोई बात मेरी समझ में तो आयी नहीं । क्या तुम

बता सकते हो कि उसने क्या कहा था ।"

"हां, प्रभु । सब कुछ समझ में आ गया । बेशक वह लड़की एक गरीब घर में जन्मी है, लेकिन वह बहुत ही होशियार है ।" मंत्री ने कहा ।

"अच्छा, मुझे ज़रा बताओ तो सही, उसने क्या कहा," राजा ने जिज्ञासा प्रकट की ।

"उस लड़की ने हमें देखते ही जो कहा, उसका अभिप्राय यह था कि उसकी मां की जान बच गयी है, और उनके दिन अब बिना किसी तकलीफ के आराम से कट रहे हैं । प्रकाश का अर्थ उसकी भाषा में सुख था और अंधकार कष्ट । अपने पिता के बारे में उसने बताया कि वह झोंपड़ी को सूर्य की तपिश से बचाने के लिए उसकी छत

ढकने की व्यवस्था कर रहा है और झोंपड़ियों की छतों पर पत्ते डालकर और पत्तों को बांधकर उन्हें ढकना उसके कई पेशों में से एक है। उसकी मां के बारे में पूछने पर उस ने कहा कि वह ताड़ी बेचने गयी है। ताड़ के पेड़ पर पानी मिलने से उसका अभिप्राय ताड़ी मिलने से था। इसीलिए कुछ लोग इसे खंभे का पानी भी कहते हैं। जब उस लड़की से पूछा गया कि वह स्वयं क्या कर रही है तो उसने उत्तर दिया कि उसने धान कूटकर और उसमें से चावल निकालकर उन्हें पकाने के लिए चूल्हे पर चढ़ा दिया है, और अब वह फर्श को मिट्टी से लीप रही है। सोना शब्द धान के लिए और चांदी शब्द चावल के लिए इस्तेमाल हुआ है। सब कुछ ढोने वाला बुद्धू और कोई नहीं, धरती ही है। कौर का अर्थ यहां गीली मिट्टी का गोला है। उससे वह फर्श को लीपकर उसे चमका रही है। यही उसके शब्दों का अर्थ था। फिर उसने यह कहा कि बीस मोहरों में से दो कम पड़ रही हैं, और इसीलिए उसका बाप मारे शरम के हमसे मिलने नहीं आया। वह हमसे तभी मिलेगा जब वह उस कमी को पूरा कर लेगा। अपनी बेटी से उसने हमें यही बताने को कहा था। हाथ दिखा देने का भी यही अर्थ है। हमें दस दिन तक और रुकने के लिए कहा गया है। दस बार पलक झपकने का मतलब है दस रात सोकर जगना।" मंत्री ने सारी बात समझाते हुए कहा।

"ठीक है।" राजा ने अपना सर हिलाया और फिर पूछा, "ये तीन क्षकार क्या हैं?"

"ये तीन क्षकर हम ही है, यानी रक्षक, भक्षक और शिक्षक।"

सारी बात जानकर राजा अब लड़की के उत्तरों से बहुत प्रभावित हुआ। अगले ही दिन उसने उस गरीब व्यक्ति को बुलवाकर कहा, "तुम्हें कर्ज़ चुकाने की ज़रूरत नहीं। मैं तुम्हें कुछ और धन दिये दे रहा हूं ताकि तुम लोग आराम से ज़िंदगी बिता सको।"

और यह कहकर राजा ने उनके लिए एक अच्छी-खासी रकम की व्यवस्था कर दी।"
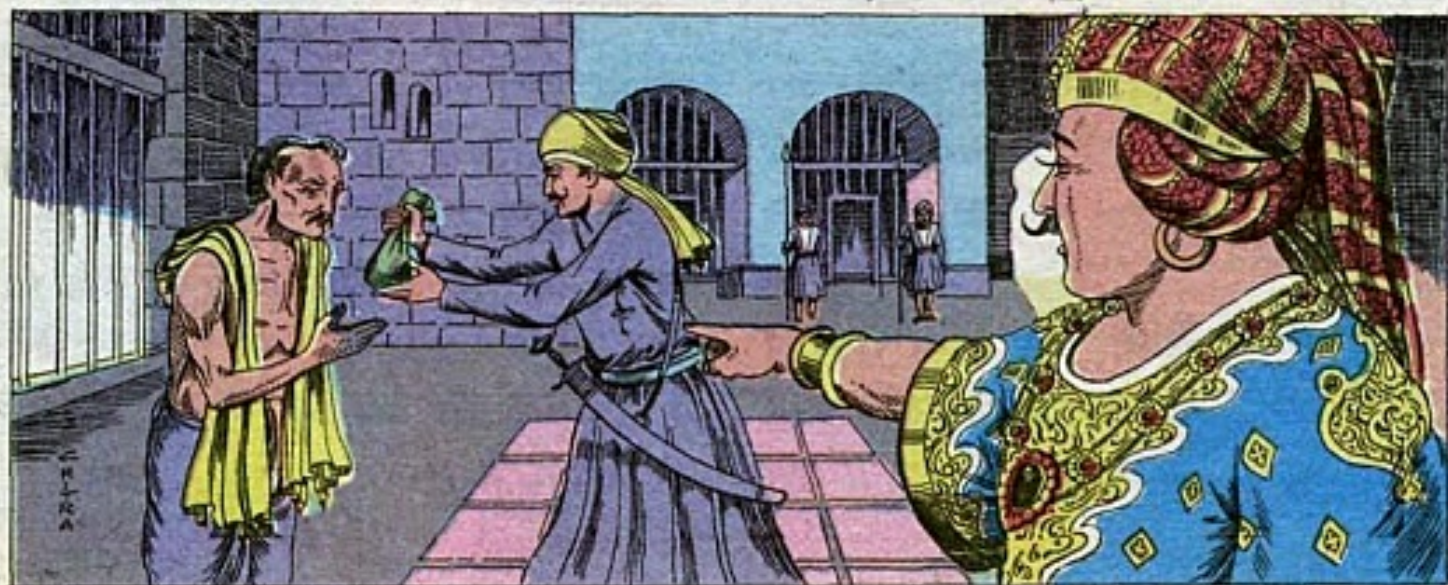
हनुमान अपने उसी सूक्ष्म रूप को धारण किये रहा, जिससे वह बेरोकटोक पाताल लंका के सिंहद्वार को पार करके नगर में प्रवेश कर गया । उसे एक दिशा से बहुत भारी कोलाहल आता सुनाई पड़ा । वह उसी दिशा में चल पड़ा ।

हनुमान ने देखा कि एक स्थान पर एक पर्वत को अद्‌भुत कला-कौशल से तराश कर काली के मंदिर में परिवर्तित किया गया था । मंदिर का प्रांगण हरे भरे तोरणों और देदीप्यमान मणि दीपों से सजा था और मैरावण के सेवक अपने हाथों में मधु से भरे घड़े लिये पंक्तिबद्ध खड़े बड़े उल्लास से गाते-बजाते रहे थे ।

मंदिर के प्रांगण में ढफली, डमरू, ढोल और दूसरे वाद्य-यंत्र बज रहे थे । हनुमान को समझते देर न लगी कि यह राम और लक्ष्मण को काली मां पर बलि चढ़ाने की तैयारी हो रही है ।

हनुमान अब अविलंब एक छिपकली के बच्चे के रूप में आ गया और मंदिर के गर्भगृह की छत पर जा पहुंचा । छत पर मां के चरणाभिषेक के लिए घड़ों में कई तरह का जल रखा हुआ था । गर्भगृह में मूर्ति के ठीक ऊपर एक छेद था । हनुमान उसी छदे में से होता हुआ बाहर से मंदिर के गर्भगृह में कूद गया ।

मां की मूर्ति काफी विशाल थी और बड़े उग्र रूप में थी । हनुमान मूर्ति के सामने खड़ा हो गया और रौद्र रूप में आकर हुंकारते

हुए बोला, "हे महाकाली, मुझे एक बात बताओ! क्या तुम राम-लक्षमण की ही बलि चाहती हो?"

काली माता अपना उग्र रूप त्यागकर तुरंत सौम्य रूप में आ गयी और बोली, "हनुमान् । मैरावण की आयु अब समाप्त होने को है । उसके अंत का वह क्षण बहुत ही निकट आ गया है । अपने इस प्रयत्न में तुम्हारी विजय होगी ।" और इस तरह हनुमान को अपना आशीर्वाद देकर वह फिर पहले की तरह मूर्ति में परिवर्तित हो गयी ।

काली के मुंह से आशीर्वचन सुनकर हनुमान गद्‌गद हो गया । अब इतमीनान से उसने मंदिर के गर्भगृह के भीतरी दरवाजे को बंद किया और काली माता की मूर्ति के पीछे जा छिपा । अब वह बड़ी उत्सुकता से मैरावण के आगमन की प्रतीक्षा करने लगा ।

उधर मैरावण के महल के रनिवास में काफी चहल-पहल थी । मैरावण के आदेशानुसार राम और लक्ष्मण का काली मां पर बलि चढ़ चुकने के बाद चंद्रसेना से उसका विवाह होना था ।

उस महल में खासकर रनिवास की सुरक्षा की ज़िम्मेदारी कंटकी नाम की एक राक्षसी पर थी जो बड़े उत्साह से चंद्रसेना का श्रृंगार कर रही थी और साथ-साथ उसके गालों पर बड़े लाड़ से उबटन लगाते हुए बीच बीच में उसे अपने राजा मैरावण का यशोगान कर रही थी ।

महल के प्रांगण में अब चहल-पहल और बढ़ गयी थी । राम और लक्ष्मण को उनके असली रूप में ले आया गया था, क्योंकि अब तक वे छोटी-छोटी प्रतिमाओं के रूप में ही थे ।

उन्हें एक गाड़ी पर चढ़ाया गया और खूंटों से बांध दिया गया । उनके शरीर को जपाकुसुम की मालाओं से सजाया गया था । गाड़ी को सर्पाकार भूत खींच रहे थे । समूची भीड़ ने जुलूस का रूप ले लिया था और वह जुलूस काली के मंदिर की ओर बढ़ रहा था ।

राक्षसों का हर्षोल्लास सुनकर चंद्रसेना समझ गयी कि इसका कारण क्या हो सकता है । वह बड़ी फुर्ती के साथ उठी और इससे

पहले कि कंटकी उसे रोकती, वह महल का प्रांगण पार करके भागती हुई मुख्य मार्ग पर चली आयी ।

उसे राम दिखाई दिये । उनके माथे पर सिंदूर पुता था और वह खूंटों से बंधे हुए थे । राम को ऐसी अवस्था में देखकर चंद्रसेना का दिल बैठ गया । इस दुख के कारण वह अपने को संभाल न पायी और बेहोश होकर गिर पड़ी ।

कंटकी चंद्रसेना के पीछे-पीछे ही दौड़ी चली आयी । वह बहुत गुस्से में थी । इसलिए बेहोश पड़ी चंद्रसेना पर बुरी तरह प्रहार करने लगी । लेकिन इससे भी चंद्रसेना होश में नहीं आयी । यह देखकर कंटकी लाचार हो गयी ।

कंटकी ने वैसे ही उसे उठाकर अपने कंधे पर डाल लिया और महल में ले जाकर उसे एक कमरे में बंद कर दिया ।

काली माता के मंदिर की प्रधान पुजारिन कंटकी ही थी । इसलिए वह वहां का काम देखने के लिए फिर महल से बड़ी तेज़ी से मंदिर की ओर दौड़ी ।

मैरावण को देवीपाद तीर्थ नाम से जाने जाने वाले मघ को उसी के हाथों से लेना था । इसी लिए कंटकी डर-घबराहट से तेजी से चल दी ।

अब देवी की मूर्ति का राक्षसों ने मद्य के साथ अभिषेक करना शुरू किया । मद्य छत के छिद्र से नीचे गिरने लगा । लेकिन हनुमान ने अपने शरीर को इतना बढ़ा लिया था कि वह माता की मूर्ति के समान विशाल दिखने लगा । इसके साथ ही वह ऐसे बोला जैसे कि काली माता स्वयं बोल रही हो, "अब मद्य का अभिषेक बंद करो और दूध का अभिषेक शुरू करो ।"

हनुमान के वे शब्द जैसे ही राक्षसों के कानों से टकराये, वे आश्चर्यचकित रह गये । वे समझ नहीं पा रहे थे कि देवी ने मद्य लेने से क्यों इनकार किया है । वे तो सोम सूत्र से होकर तीर्थ कुंड में पड़ने वाले मद्य को पीने के लिए अपने पात्रों को लिये तैयार खड़े थे । इसलिए अब वहां कोलाहल के स्थान पर चुप्पी छायी हुई थी ।

राम वैसे ही, खूंटों से बंधे हुए, गाड़ी पर खिंचे चले गये । अब वह लक्ष्मण की ओर

कहकर मैरावण ने राक्षसों को आदेश दिया कि वे पर्याप्त मात्रा में दूध की व्यवस्था करें ताकि मां का अभिषेक उसी से किया जा सके ।

राक्षस बड़े-बड़े बर्तनों में दूध ले आये और काली मां की मूर्ति का अभिषेक शुरू हो गया । हनुमान तो इस मैके की ताक में था ही । जैसे ही तीर्थकुंड के ऊपर वाले छिद्र से दूध गिरना शुरू हुआ, वैसे ही वह अपना मुंह वहां लगाकर दूध का काफी अंश पी गया । इससे उसके बदन में काफी स्फूर्ति आ गयी ।

थोड़ी देर में ही अभिषेक समाप्त हो गया । मैरावण बड़े उत्साह में था । वह उसी उत्साह के साथ मंदिर के गर्भगृह में ज पहुंचा और वहां साष्टांग प्रणाम करते हुए बोला, "मां, मुझे दर्शन दो ।"

उसकी प्रार्थना जैसे कि तुरंत स्वीकार हो गयी, उसे भीतर से एक गंभीर स्वर सुम पड़ा, "मैरावण, पहले तुम मेरे पास अपने बड़े भाई अहिरावण को फल और फूलों के साथ मेरी अर्चना के लिए भेजो ।"

मैरावण अपने बड़े भाई अहिरावण के पास गया और उससे बोला, "भैया, मां की तुम पर विशेष कृपा है । वह तुम्हें नैवेद्य के साथ भीतर बुला रही हैं ।"

अहिरावण का शरीर पर्वत के समान विशाल था । वह उसे किसी तरह संभालता हुआ फल औ पुष्पों के साथ, तथा एक स्वर्ण पात्र में मधु लिये, मंदिर के गर्भगृह में प्रवेश

देखते हुए थोड़ा-सा मुस्कराये ।कंटकी बड़ी चिंतातुर दिख रही थी । उधर मैरावण की आंखें आश्चर्य से फैली हुई थीं और वह टकटकी लगाये अपने बड़े भाई अहिरावण की ओर देख रहा था ।

अहिरावण ने अपना सर हिलाते हुए कहा, "छोटे भैया, इस में आश्चर्य करने की कोई बात नहीं । राम और लक्ष्मण सात्विक हैं । मद्य के साथ यह सात्विक आहार अपना अर्थ खो देता है न? इसीलिए काली मां ने दूध मांगा है ।"

"भैया, आप शायद ठीक ही कह रहे हैं । आप हर रोज़ देवीपाद–तीर्थ मद्य का पान करते ही हैं । इसलिए आप काली माता का मन आसानी से जान गये होंगे ।" और यह

कर गया ।

हनुमान ने तो उस समय उस गर्भ गृह के कपाट खोल रखे थे । अहिरावण के वहां प्रवेश करते ही वे कपाट बंद हो गये ।

अहिरावण जैसे ही नैवेद्य काली मां की मूर्ति के सामने रखने को हुआ, वैसे ही हनुमान ने उसे उसके गले से आ दबोचा और उसका चुपचाप काम तमाम कर दिया । साथ ही अहिरावण जो फल-फूल और खाद्य पदार्थ अपने साथ लाया था, उन्हें भी वह खा गया और स्वर्ण पात्र में लाये गये मधु को पी गया । इस सब से अब उसकी स्फूर्ति और बढ़ गयी थी ।

अपने को आश्वस्त करने के लिए हनुमान ने चारों ओर देखा और फिर अहिरावण के मृत शरीर को लुढ़काते हुए एक ओर कर दिया । फिर उसने उसी गंभीर आवाज़ में पुकार कर कहा, "अब राम और लक्ष्मण को भीतर भेजो, मैरावण । मेरे प्रिय भक्त अहिरावण को उनसे मेरी पूजा करवानी होगी ।" और इसके साथ ही उसने गर्भगृह के कपाट खोल दिये ।

मैरावण ने राम और लक्ष्मण को गर्भगृह में धकेल दिया । राम और लक्ष्मण जब भीतर आ गये तब मूर्ति के पीछे छिपा हनुमान बोला, "हे रघुवंशवीर, पहले इन कपाटों को ठीक से बंद करके उनकी सांकल ठीक से चढ़ा दो ।"

उसका स्वर इतना महीन था मानों काली मां स्वयं बोल रही हो । उस स्वर को सुनकर लक्ष्मण को बड़ा अचंभा हुआ, और वह उसी अचंभे के साथ राम की ओर देखने लगा । राम स्थिति को समझ गये थे । उन्होंने अपनी सहज-स्वाभाविक मुस्कान के साथ कहा, "हे लक्ष्मण, तुम अब तक भी असली बात नहीं समझे । पहले कपाट बंद करो ।"

लक्ष्मण ने राम के आदेश का पालन करते हुए गर्भगृह के कपाट बंद कर दिये । अब उन्हें वह स्वर फिर सुनाई पड़ा । "मूर्ति के पीछे आ जाओ ।"

राम और लक्ष्मण मूर्ति के पीछे चले गये । वहां उन्हें हनुमान दिखाई दिया । उसे देखकर दोनों भाई बहुत खुश हुए । लक्ष्मण जब आश्चर्य करने लगा तो राम ने कहा, "लक्ष्मण । जब काली मां ने मद्य का

था। राक्षस, राम और लक्ष्मण की बलि देखने के लिए उतावले हो रहे थे। बलि के लिए निश्चित किया गया मुहूर्त निकला जा रहा था। फिर भी अहिरावण, राम और लक्ष्मण को गर्भगृह से बाहर नहीं ला रहा था।

सबसे पहले कंटकी को कुछ संदेह हुआ। उसे लगा कि गर्भगृह में कोई चाल ज़रूर चली जा रही है। उसने बड़ी सावधानी से कपाटों की दरार से भीतर झांकने की कोशिश की। उसे देवी के पांवों के पास अभिषेक का दूध बहुत कम दिखाई दिया। इससे उसका संदेह और बढ़ा, बल्कि उसे विश्वास हो गया कि गर्भगृह में किसी भयंकर शत्रु ने अपना डेरा जमा लिया है।

कंटकी ज़ोर से चीखी और राक्षसों की ओर टुकर-टुकर देखने लगी। इससे राक्षस उसके और निकट चले आये, बोले, "क्या बात है? क्या मां ने तुम्हारी बलि मांगी है?"

राक्षसों का प्रश्न सुनकर कंटकी और भी चीखी और कहने लगी, "अरे मतिहीनो, तुम्हारी आंखों के सामने ही तुम्हारे साथ ऐसा छल हो रहा है। हमारे सारे रहस्य शत्रु तक पहुंच गये हैं। उन्हें और किसी ने नहीं, चंद्रसेना ने ही उस तक पहुंचाया होगा। महाशक्तिशाली मैरावण के शासन में क्या वाकई कोई शत्रु पाताल लंका तक पहुंचने का साहस कर सकता है? कौन हो सकता है वह शत्रु?"

उन राक्षसों में कुछ धैर्यवान राक्षस भी

अभिषेक करवाने से इनकार कर दिया और दूध से अभिषेक करवाने की इच्छा व्यक्त की, तो मैं तभी समझ गया था कि गर्भगृह में हमारा हनुमान पहुंच गया है।"

राम ने जब यह बात कही तो लक्ष्मण के सामने धीरे-धीरे सारी गुत्थी खुलने लगी। हनुमान ने उन्हें माता की मूर्ति के पास पूजा के लिए रखे धनुर्बाण दिखाये। राम और लक्ष्मण ने उन्हें तुरंत उठाकर अपने कब्ज़े में ले लिया।

हनुमान ने अब अपने शरीर को खूब बढ़ाया और राम तथा लक्ष्मण को अपनी भुजाओं पर बैठा लिया। फिर उसने वहां रखे बाकी बाणों को भी समेट लिया।

गर्भगृह के बाहर बड़ा कोलाहल मचा हुआ
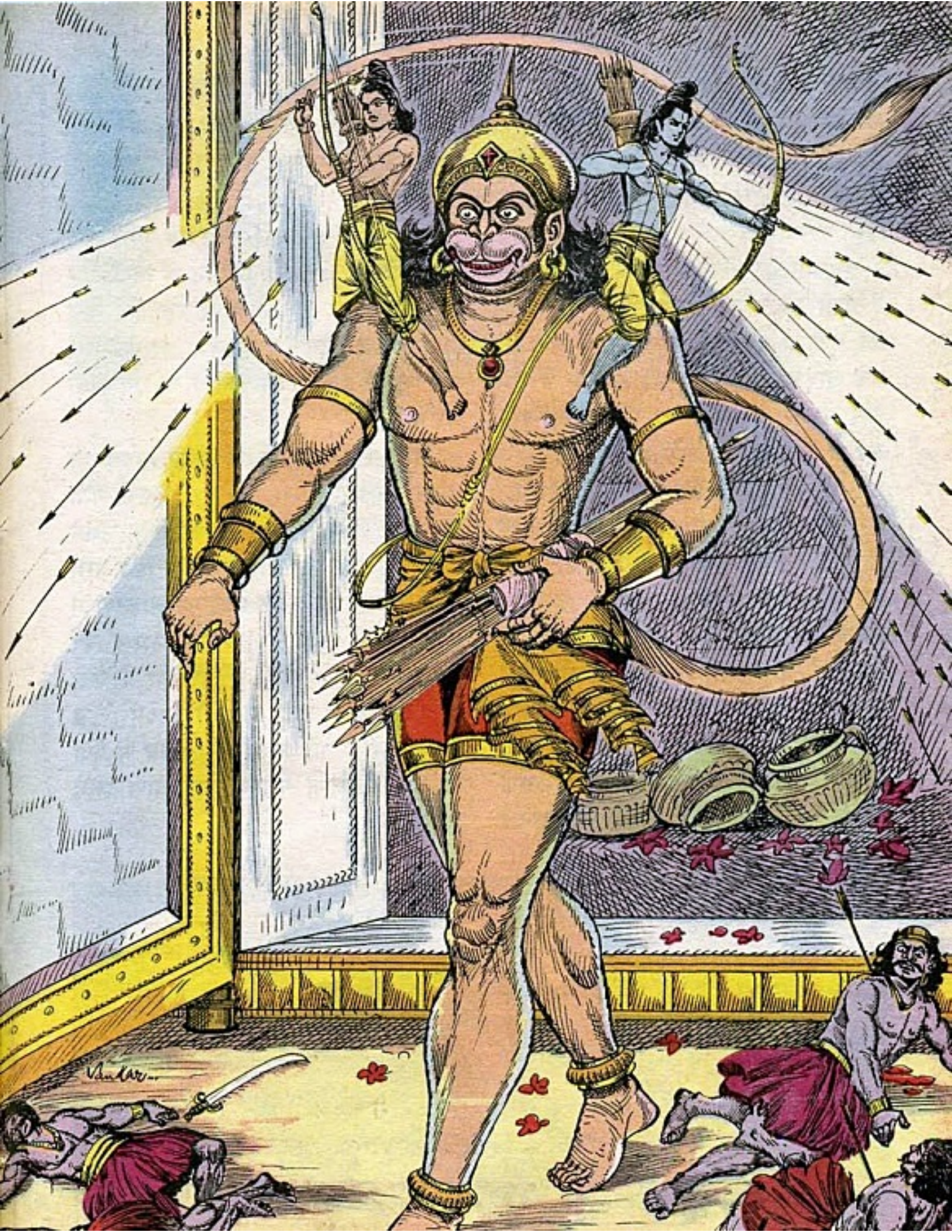
थे । वे गर्भगृह की ओर बढ़े । अभी वे कपाटों को अपने हाथों से धकेलने जा ही रहे थे कि हनुमान ने भयंकर रूप से हुंकार करते हुए स्वयं ही उन्हें खोल दिया और फिर बाहर चला आया ।

हनुमान को देखते ही राक्षस चीख उठे, "धोखा! बहुत बड़ा धोखा!" फिर वे हनुमान की भुजाओं पर बैठे राम और लक्ष्मण को बडे आश्चर्य से देखने लगे । इतने में राम और लक्ष्मण ने उन पर बाणों की वर्षा शुरू कर दी । देखते ही देखते वहां हाहाकर मच गया और लाशों के ढेर लग गये । मैरावण राम और लक्ष्मण को हनुमान की भुजाओं पर बैठा देख वह गुस्से से बौखला उठा और भयंकर हुंकार करते हुए अपना धनुर्बाण संभाल कर युद्ध के लिए तैयार हो गया ।

उधर राम और लक्ष्मण अपने दुगुने उत्साह से मैरावण पर बाण छोड़ रहे थे । लेकिन मैरावण तो मैरावण था, वह उन बाणों से बिलकुल विचलित नहीं हुआ, बल्कि उसके रक्त की जो बूंदें नीचे गिरती थीं, उनसे और-और मैरावण पैदा होते जा रहे थे । ये नये मैरावण भी मूल मैरावण की तरह हुंकार करते हुए राम और लक्ष्मण पर बाण छोड़ रहे थे ।

राम और लक्ष्मण के लिए यह दृश्य बड़ा विस्मयकारी था । वे हनुमान से बोले, "हे हनुमान । यह सब कैसे हो रहा है? क्या यह सत्य है? हम इन मैरावणों का कैसे वध करें जिससे इनके रक्त की एक भी बूंद पृथ्वी पर न गिरे?"

राम और लक्ष्मण के प्रश्न सुनते ही हनुमान को सुवर्चला देवी द्वारा बतायी गयी चंद्रसेना की बात याद हो आयी । उसने केवल दो टूक उत्तर दिया और फिर राम और लक्ष्मण को लेकर एकाएक आकाश में उड़ा, और उन्हें एक ऊंचे स्थल पर उतारकर वहां से तेजी से चंद्रसेना के कक्ष की ओर बढ़ा । उधर राम और लक्ष्मण उस उंचाई पर से भी लाखों की संख्या में पैदा हो गये मैरावणों पर बराबर बाण छोड़े जा रहे थे ।

सम्राट्

राजा राजवर्मा के मन में एक बार सम्राट् बनने की इच्छा जगी । उसने अपने मंत्री धर्मचिंतन को बुलवाया और उसे आदेश दिया कि युद्ध की तैयारी की जाये ।

मंत्री ऐसा आदेश पाकर सकते में आ गया । बोला, "राजन्, आप जानते ही हैं कि युद्ध के कारण कैसी-कैसी विपत्तियां टूटती हैं । धन, मान और प्राण, सबसे हाथ धोने पड़ सकते हैं । राज्य में अकाल और अशांति फैल सकती है । इस शांत वातावरण को भंग करने का विचार आपके मन में कैसे पैदा हुआ? अच्छा हो आप यह विचार अपने मन से निकाल दें ।"

राजवर्मा को अपने मंत्री की यह सलाह पसंद नहीं आयी । उसने उसे उसके पद से हटा दिया और उसके स्थान पर अवकाश वर्मा को मंत्री बना दिया । नये मंत्री का नाम अवकाश वर्मा था । राजा ने उस को अपने मन की बात भी बता दी ।

अवकाश वर्मा की नज़र काफी अर्से से सिंहासन पर लगी हुई थी । वह स्वयं राजा बनने के सपने देख रहा था । जब तक धर्मचिंतन राजा का मंत्री बना रहा, उसे अपनी इच्छा पूरी करने का कोई अवसर दिखाई न दिया । लेकिन जैसे ही वह मंत्री बना, उसे अपना सपना साकार होते दिखा ।

वह राजा से बोला, "राजन्, आपके मुखमंडल पर सम्राट् के सभी चिह्न दिखाई दे रहे हैं । आप अवश्य सम्राट् बनेंगे । लेकिन हमारे पड़ोसी राजा हमसे ज़्यादा शक्तिशाली हैं । अपने लक्ष्य की सिद्धि के लिए हम पर दैवकृपा भी चाहिए । हमारे राज्य की सीमा पर जो प्रलय पर्वत है, वहां प्रलय मुनि घोर तपस्या में लीन हैं । मेरी राय में आप उनसे आशिर्वाद प्राप्त करें । सफलता आपको ज़रूर मिलेगी ।"

उस पर्वत पर कोई राक्षस नहीं रहता । यह बात मुझे प्रलय मुनि के एक शिष्य से पता चली है । उस शिष्य ने यह भी कहा कि वहां कोई राजा ही जा सकता है, सामान्य व्यक्ति नहीं । सामान्य व्यक्ति जिंदा वापस नहीं आयेगा । आप धैर्य बनाये रखें और उस पर्वत पर अवश्य जायें । आपको वहां महान शक्ति प्राप्त होगी, और आप तब वहां से लौट आयेंगे ।" अवकाश वर्मा ने राजा को आश्वस्त किया ।

राजवर्मा को लगा कि यदि वह पर्वत पर चढ़ने का इतना-सा साहस भी न जुटा सका तो वह सम्राट् बनने की अपनी इच्छा कैसे पूरी करेगा । इसलिए उसने राजपाट का सारा भार अपने नये मंत्री को सौंप दिया और स्वयं उस पर्वत की ओर चल पड़ा ।

दरअसल, प्रलय पर्वत पर प्रलय नाम का एक राक्षस रहता था । वह बहुत ही विकट था । लेकिन उसे एक शाप भी मिला हुआ था । वह तब तक किसी राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता था, जब तक कि उसे वहां के राजा से अनुमति प्राप्त न हो ।

अवकाश वर्मा की बात सुनकर राजा ने कहा, "मैंने पहले कभी किसी प्रलय मुनि के बारे में नहीं सुना । हां, वहां रहने वाले प्रलय राक्षस के बारे में ज़रूर सुन रखा है ।"

"राजन्, जो कुछ आपने सुना है, वह केवल अफवाह है । यह अफवाह इसलिए फैलायी गयी है ताकि कोई सामान्य व्यक्ति मुनि की तपस्या में विघ्न न डाले । आप कृपया इस अफवाह में विश्वास न करें ।

राजा राजवर्मा कई कष्ट उठाकर प्रलय पर्वत पर पहुंचा । वह काफी थक चुका था । इसलिए वह एक बरगद के पेड़ के नीचे आराम करने लगा । तब अचानक उसके सामने एक दुदांत राक्षस आ खड़ा हुआ । उसके समूचे बदन पर घने बाल थे और उसकी आंखें भयंकर दिखती थीं । ऐसे विकराल राक्षस को देखकर बड़े से बड़े साहसी का भी दम खिसक सकता था ।

बहरहाल, राजा तो अवकाश वर्मा के झूठे आश्वासन पर विश्वास कर ही चुका था, इसलिए वह प्रलय जैसे राक्षस को देखकर भी विचलित नहीं हुआ, बल्कि उसका अभिवादन करते हुए बोला, "हे मुनिवर ।

मैं इस राज्य का राजा हूं, और मेरा नाम राजवर्मा है । आप कृपया अपना यह विचित्र वेश त्याग दें और मेरी इच्छा की पूर्ति के लिए आशीर्वाद देकर मुझे अनुग्रहीत करें ।''

राजा की बात सुनकर प्रलय राक्षस को बड़ी हैरानी हुई । उसने एक बार राजा की ओर बड़ी कड़ी नजरों से देखा, और हुंकार करते हुए बोला, ''तुम एक राक्षस में मुनि के दर्शन करना चाहते हो । बड़ी अजीब बात है । लेकिन अब क्योंकि मैं जान गया हूं कि तुम एक राजा हो, मैं तुम्हें एक शर्त पर छोड़ने को तैयार हूं । तुम मुझे अपना मंत्री बनाकर अपने साथ ले चलो, और मुझसे वायदा करो कि तुम मेरी सलाह के बिना कुछ भी नहीं करोगे । फौरन अपनी स्वीकृति दो, वरना मैं अभी तुम्हें निगल जाऊंगा ।''

राजा की समझ में नहीं आ रहा था कि अब वह क्या करे । वह बड़ी असमंजस में था । यह तो वाकई राक्षस निकला, उसने मन ही मन कहा । इसमें तो मुनि वाले लक्षण बिलकुल नहीं हैं । अगर यह राक्षस ही है तो इसकी शर्त मान लेने का अर्थ होगा,हर समय खतरे में से गुजरते रहना ।

राजा अभी सोच ही रहा था कि प्रलय राक्षस ने उसे झट से उठाया और अपने मुंह में डालने को हुआ । लेकिन मुंह में डालने से पहले उसने एक बार फिर कहा, "तुम बोलते क्यों नहीं? मुझे बड़े ज़ोरों की भूख लगी है । जल्दी से मुझे हां या न कहो ।''

राक्षस का मुंह एक काली गुफा के समान

खुला था और उसकी जिह्वा एक भारी अजगर की जिह्वा दिखती थी । राजा बुरी तरह से डर गया था । उसने तुरंत कहा, ''तुम्हारे जैसे शक्तिशाली व्यक्ति को अपना मंत्री बनाने में मेरी भलाई ही भलाई है । मैं इस प्रस्ताव को कैसे ठुकरा सकता हूं । बस, मेरी एक ही चिंता है । मैं तुम्हें इस रूप में अपने साथ कैसे ले जा सकता हूं?''

''तुम इसकी चिंता मत करो । मैं जब चाहूं, जैसे चाहूं, अपना रूप बदल सकता हूं । ऐसी शक्ति मुझ में है । बस, तुम मुझे वचन दो कि तुम मेरी हर बात मानोगे ।'' राक्षस ने कहा,

''तुम मेरे मंत्री ही क्यों बनना चाहते हो? तुम तो मुझे मारकर मेरे राज्य में राजा बनकर

रह सकते हो ।" राजवर्मा ने अपना संदेह व्यक्त करते हुए कहा ।

राजा राजवर्मा का प्रश्न सुनकर राक्षस थोड़ा-सा चक्कर में पड़ गया । फिर बड़ी धीमी आवाज में, जैसे कि कोई रहस्य बता रहा हो, बोला, "मुझ पर एक शाप है । मैं राजा की स्वीकृति के बिना उसके राज्य में पांव नहीं रख सकता । अगर मैं अब तुम्हें मार दूं तो मैं स्वीकृति किस से लूंगा । शायद तुम अब यह भी जानना चाहो कि मैं तुम्हारा मंत्री क्यों बनना चाहता हूं । राजा का दायित्व होता है प्रजा की रक्षा करना और मंत्री का दायित्व होता है राजा के हितों की रक्षा करना । मैं तुम्हारे हितों की रक्षा आसानी से कर सकता हूं । प्रजा की रक्षा करना बहुत बड़ा काम है । जब राजा मेरे वश में रहेगा, तब चाहे प्रजा के साथ अन्याय ही क्यों न होता रहे, वह राजा की जिम्मेदारी होगी, मेरी नहीं ।"

राक्षस की बात सुनकर अब राजा चक्कर में पड़ गया । वह जानता था कि उस राक्षस की शक्ति अपार है । दूसरे, राक्षस ने उसे किसी प्रकार की हानि भी नहीं पहुंचायी थी, क्योंकि वह उसके हितों की रक्षा करने वाला मंत्री बनना चाहता था । ऐसी स्थिति में राजा की भलाई ही भलाई थी, और मौका मिलने पर वह उसकी सहायता से सम्राट् भी बन सकता था । यह सब सोचते हुए उसने राक्षस की शर्त मंजूर कर ली ।

जैसे ही राजा ने राक्षस की शर्त मंजूर की, वैसे ही राक्षस मानव रूप में आ गया और राजा के साथ राजधानी चलने के लिए तैयार हो गया ।

इस बीच अवकाश वर्मा ने राज्य भर में घोषणा करवा दी थी कि राजा की मृत्यु हो गयी है । इसलिए वह अपना राजतिलक करवाने के प्रयास में था । जब उसने देखा कि राजा वापस आ गया है तो उसके हाथ-पांव फूल गये और उसकी घिग्घी बंध गयी ।

राजा ने उसकी ओर आंखें तरेरते हुए देखा और कहने लगा, "तुमने जो अपराध किया है, उसका दंड अब तुम्हें स्वयं ही बता देना होगा ।"

राजा आगे कुछ कहने जा ही रहा था

कि उसके राक्षस मंत्री ने बीच में ही राजा को रोककर कहा, "राजान्, आज से राज्य में जब भी कोई अपराध होगा, उस अपराध के बारे में निर्णय लेना आपका काम है और अपराधी को दंड देना मेरा काम है । देखें कि मैं इस राजद्रोही को कैसे दंड देता हूं ।" और यह कहकर उसने तुरंत अपना शरीर बढ़ाया और अवकाश वर्मा को अपनी मुट्ठी में भरकर अपने मुंह में डालकर निगल गया ।

उसे निगल चुका तो वह फिर मानव रूप में आ गया । यह सब देखकर वहां पर उपस्थित सभी लोग मारे डर के बुरी तरह से सहम गये ।

राक्षस मंत्री के इस कृत्य पर राजा भी डर से कांप गया । उसे यह जानकारी नहीं थी कि राक्षस इस तरह व्यवहार करेगा । अब तो जब कोई व्यक्ति किसी छोटे-मोटे अपराध के लिए भी अपराधी घोषित किया जाता तो राक्षस उसे पकड़ कर खा जाता ।

अचानक राज्य में अपराध एकदम बंद हो गये । अगर लोगों के बीच कोई झगड़ा हो भी जाता, तो वे न्याय के लिए राजा के पास नहीं आते थे, बल्कि आपस में ही समझौता करके निपट-निपटा लेते थे ।

ऐसे ही कुछ दिन बीत गये । तब एक दिन राक्षस ने राजा से कहा, "यदि जनता अपराध नहीं करेगी तो मुझे भोजन कहां से मिलेगा? लोग मुझसे डरकर दरबार में न्याय के लिए नहीं आते । इसलिए अब हमें स्वयं प्रजा के बीच जाना होगा । आप

अपराधी का अपराध सिद्ध करेंगे, और मैं उसे दंड के रूप में अपना भोजन बनाऊंगा ।"

यह बात राजा राजवर्मा को पसंद नहीं आयी । उसने कहा, "तुम्हें पेट-भर भोजन मिले, इसके लिए मेरे मन में बहुत ही बढ़िया विचार आया है । हम पड़ोसी राज्यों पर आक्रमण करेंगे और उनसे युद्ध करेंगे । युद्ध में जीत हमारी ही होगी और जिन शत्रु-सैनिकों को हम बंदी बनायेंगे, उन्हें तुम एक-एक करके सालों तक खा सकते हो ।"

राक्षस को यह बात पसंद आयी । फिर क्या था । तुरंत पड़ोसी राज्य पर चढ़ाई कर दी गयी । दोनों राज्यों की सेनाएं आपस में भिड़ गयीं । पड़ोसी राजा धर्मसेन का

सैन्यवल अपार था, लेकिन राजवर्मा की सेना के बीचों-बीच राक्षस विशाल बरगद के समान खड़ा था। उसे देखते ही धर्मसेन के सैनिकों के पांव डगमगाने लगे।

धर्मसेन ने सैनिकों की ऐसी हालत देखकर राजवर्मा ने उससे कहा, "मेरे पास सैनिक बल के साथ-साथ राक्षस बल भी है। मेरे साथ युद्ध करके तुम अपने सैनिकों की जान के साथ-साथ अपनी जान भी खोना क्यों चाहते हो। तुम्हारी भलाई इसी में है कि तुम मेरे सामंत बन जाओ, वरना अपनी जान से हाथ धो बैठोगे।"

धर्मसेन ने राजवर्मा को कोई उत्तर नहीं दिया। बस, अपने सैनिकों को लौट जाने का आदेश दिया। धर्मसेन तथा उसकी सेना जब युद्धस्थल से लौट रही थी, तो राजवर्मा बड़े विकट रूप से हंस रहा था।

उसी समय राजवर्मा का पुराना मंत्री धर्मचिंतन कहीं से वहां आ पहुंचा। उसने राजा को संबोधित करते हुए कहा, "प्रभु, अब और आगे मत बढ़िए। आप धर्मसेन की चाल को समझ नहीं रहे। आपकी जान खतरे में पड़ सकती है।"

"जो मुझ से डरकर भागा है, मैं उससे क्यों डरूं? लगता है तुममें भीरुता कुछ ज़्यादा ही घर कर गयी है।" राजवर्मा ने धर्मचिंतन को फटकार-सी देते हुए कहा।

"आप ज़रा सोचिए, प्रभु। इस समय हम अपने राज्य के सीमांत पर हैं। धर्मसेन अपनी सेना को अपने राज्य की सीमाओं के भीतर ले गया है। आप के राक्षस मंत्री पर शाप है। वह उस राज्य में तब तक नहीं घुस पायेगा, जब तक कि उसे वहां के राजा से अनुमति न मिले। इस स्थिति में केवल आप और आपकी सेना ही उस राज्य में जा पायेगी। आपके राक्षस मंत्री को यहीं रुकना होगा। ऐसी स्थिति में धर्मसेन आपको आसानी से पराजित कर देगा। तब हमारे राज्य का राजा धर्मसेन होगा और उसकी अनुमति के बिना यह राक्षस वहां रह नहीं पायेगा। इसलिए मेरी बात मानकर आप वापस चले जाइए।" धर्मचिंतन ने कहा।

अब कहीं जाकर राजवर्मा की समझ में असली बात आयी। वह जान गया कि राक्षस मंत्री की मदद से पड़ोसी राज्य पर विजय

पाना असंभव है। इससे वह बहुत हताश हुआ। उसने धर्मचिंतन से कहा, "अब मुझे क्या करना चाहिए? शत्रु-सैनिक नहीं मिलेंगे तो राक्षस प्रजा को ही खाता रहेगा। मुझे इससे किसी न किसी तरह छुटकारा चाहिए।"

इस पर धर्मचिंतन बोला, "प्रभु, जब कोई राजा पराये राज्यों को जीतने की फिराक में पड़ जाता है तो वह एक प्रकार से राक्षस ही बन जाता है। प्रजा जब अपराध करती है तो वह राक्षस का भोजन बन जाती है। राक्षस मंत्री की कृपा से हमने ये दोनों तथ्य जान लिये हैं। आप अब राक्षस को आदेश दीजिए कि वह हमारा राज्य छोड़कर चला जाये। इसी में हम सब की भलाई है।"

राजा को यह सलाह पसंद आयी। उसने राक्षस से कहा कि वह राज्य छोड़कर चला जाये। इस पर राक्षस एकदम गुस्से में आ गया और राजा को पकड़ने के लिए उसकी ओर बढ़ा। लेकिन जैसे ही वह आगे बढ़ा, वैसे ही राजा की सेना एकजुट होकर उस पर टूट पड़ी। इससे राक्षस का समूचा साहस काफूर हो गया और वह वहां से डर कर भाग खड़ा हुआ।

यह देखकर राजवर्मा बहुत खुश हुआ। उसने धर्मचिंतन से कहा, "मंत्री जी, मैंने आपके प्रति अन्याय किया था।"

लेकिन धर्मचिंतन बड़े शांत और विनम्र भाव से बोला, "प्रभु, मानव जब आपस में ही लड़ते रहते हैं तो राक्षसी बल को बढ़ावा मिलता है। लेकिन सभी मानव जब एकजुट हो जायें तो राक्षस उनका सामना नहीं कर सकते। राजा को चाहिए कि वह अपनी सैनिक शक्ति का उपयोग राक्षस शक्ति का अंत करने के लिए करे, अपना राज्य फैलानेके लिए नहीं। आप सम्राट् बनने की आकांक्षा छोड़ दीजिए और आपके राज्य में जो मानव-रूपी राक्षस छिपे हुए हैं, उन्हें ढूंढ-ढूंढकर उनका निर्मूलन कर दीजिए। इससे जनता हमेशा आपकी जयजयकार करती रहेगी।

राजा राजवर्मा को धर्मचिंतन की सलाह बहुत पसंद आयी। उसने उसे मंत्रीपद पर बहाल कर दिया, और फिर कई वर्षों तक वहां सुख-शांति के साथ राज करता रहा।
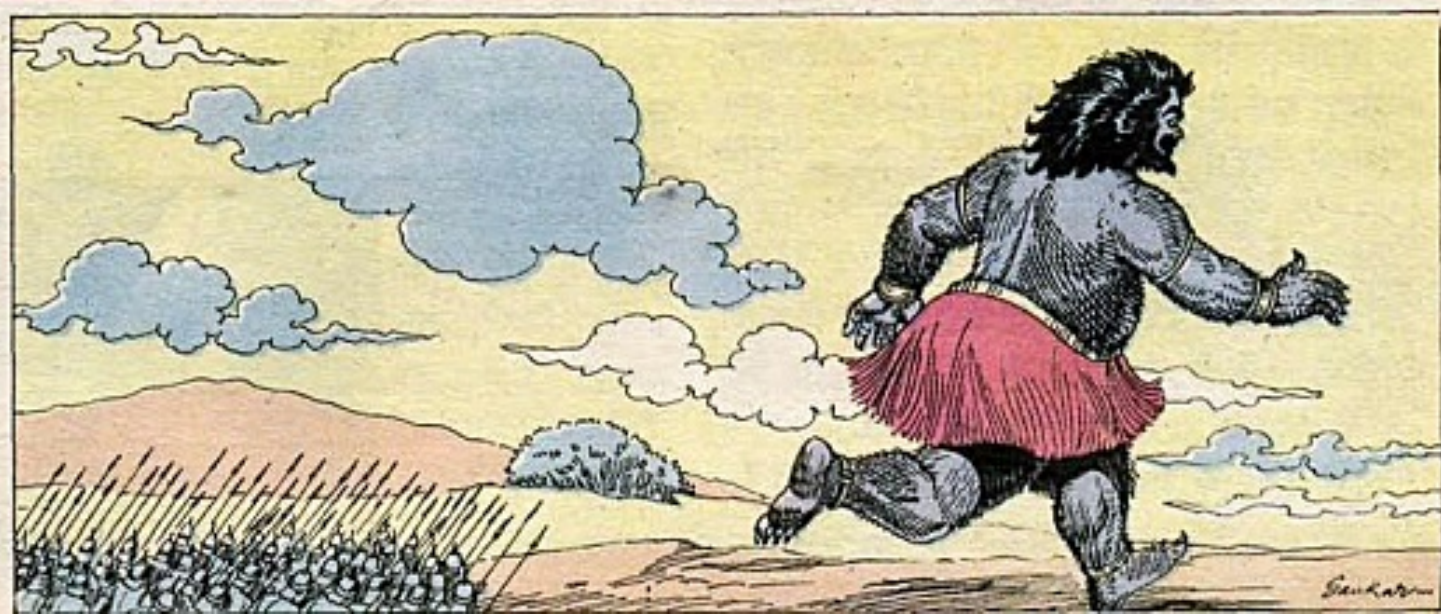
पिरामिड भूकंप की चपेट में

लिखित इतिहास में पहली बार मिस्र के पिरामिडों को भूकंप के कारण क्षति पहुंची है। इन पिरामिडों को संसार के अजूबे माना जाता है। वास्तुकला की दृष्टि से ये अद्भुत हैं। इन्हें शाही कब्रों को सुरक्षित रखने के लिए बनाया गया था, जैसे कि काहिरा के पास गिज़्हे में खुफू का महान पिरामिड। इसके अलावा इन्हें देवता के आराधना-स्थल के आधार के रूप में भी इस्तेमाल किया जाता था, जैसे कि बैबल की मीनार। गिज़्हे के पठार में स्थित खुफू और चियोप्स के परामिडों को १९ अक्तूबर को आये भूकंप से अच्छा-खासा नुक्सान पहुंचा है। सकरा के छः सीढ़ियों वाले संसार के सबसे पुराने पिरामिड, तथा चैफरेन के पिरामिड के कुछ पत्थर अपनी जगह से हट गये हैं। कोशिश अब यह हो रही है कि मिस्र की इस धरोहर को और अधिक नुक्सान पहुंचने से बचाया जाये।
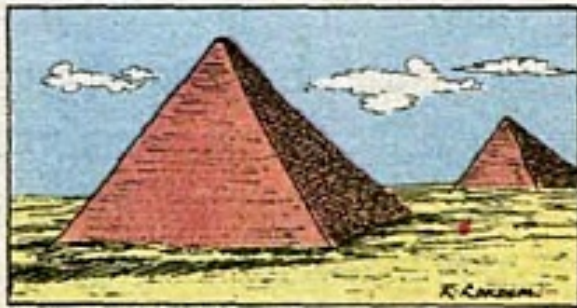
वर्षा का कीर्तिमान

संसार का वह कौन सा स्थान है जहां सबसे ज़्यादा बारिश होती है? मेघालय का चेरापूंजी? नहीं। सात वर्षों के अंतराल के बाद, एक तरह से, यह कीर्तिमान भारत को लौट आया है। मेघालय के मॉसिनराम में औसतन सालाना बारिश ११,८७३ मि. मी. रिकॉर्ड की गयी है। १९८५ तक जिस स्थान पर सब से ज़्यादा बारिश होती थी, वह चेरापूंजी (११,३१४ मि. मि) माना जाता था। लेकिन फिर आंकड़ों से पता चला कि अमरीका के हवाई क्षेत्र के वैलीएल (११,४३८

मि. मि.) में ज़्यादा बारिश हुई। लेकिन नवीनतम आंकड़ों ने इस दोनों स्थानों को पीछे छोड़ दिया है, और उनका स्थान मॉसिनराम ने ले लिया है। यह चेरापूंजी से १६ कि. मी. की दूरी पर है। यहां साल में लगभग १५० दिन तक बारिश होती रहती है। १० जुलाई, १९५२ को यहां एक ही दिन में ९८९.६ मि. मि. बारिश हुई। ४० वर्ष पुराना यह कीर्तिमान अब भी क़ायम है। इस प्रकार चेरापूंजी में लगातार वर्षा होने का कीर्तिमान १२ महीने, ६ महीने और एक महीना है, जो संसार में सबसे ज़्यादा है।

हैलो

हाल ही में अमरीका के अंतरिक्ष संस्थान, नासा, ने बाह्य जगत में जीवन-चिह्न ढूंढ़ने के लिए आकाश की ओर देखने वाले एक बहुत बड़े एंटीना को खड़ा किया है। ३४ मीटर चौड़े इस डिश एंटीना को कैलिफोर्निया के मोजावे नाम के मरुस्थल में खड़ा किया गया है। इसने रेडियो तरंगों (फ्रिक्वेंसियों) को पकड़ने के लिए आकाश पर अपनी नज़र दौड़ानी शुरू कर दी है। जिस समय इन तरंगों की भाषा समझ ली जायेगी, हो सकता है हमें बाह्य जगत के बारे में कुछ संकेत भी मिलें। तुम अंदाज़ा लगा सकते हो कि नासा के वैज्ञानिक उस दूसरी दुनिया से 'हैलो' सुनने के लिए कितने उतावले हो रहे हैं। यह 'हैलो' जाने किस भाषा में सुनने को मिले।
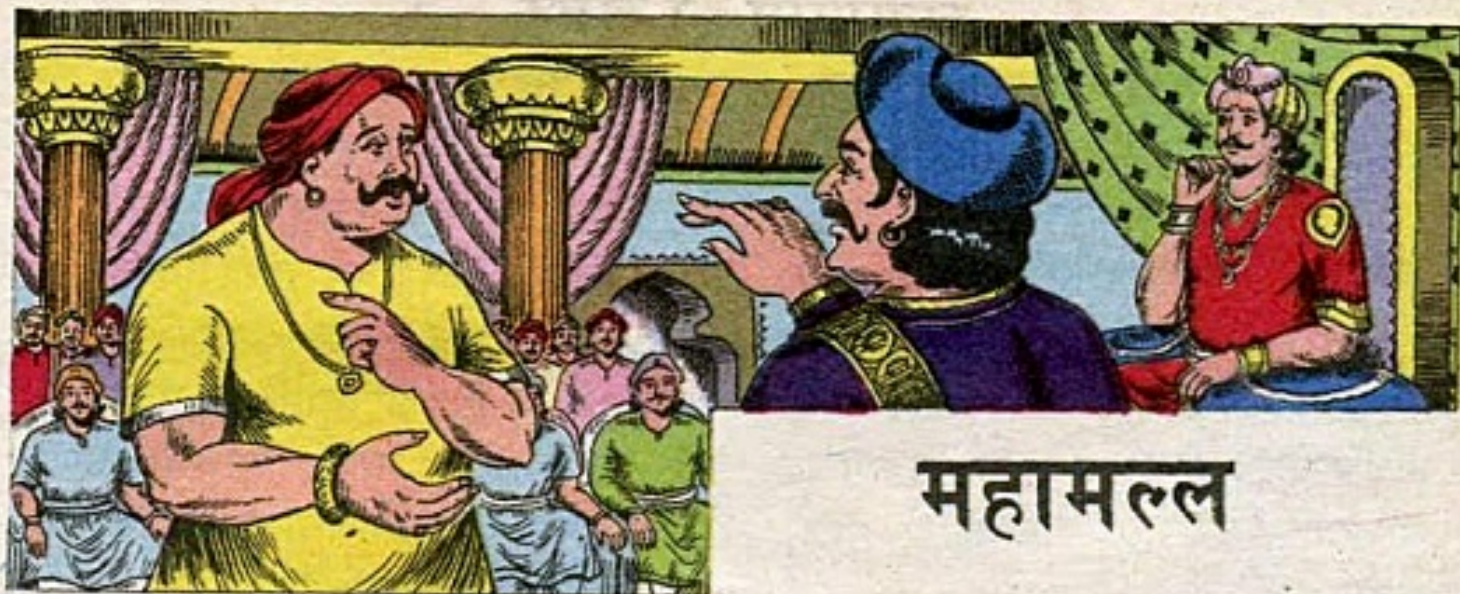
महामल्ल

बात पुरानी है। कर्नाटक भू-भाग के शुभवती राज्य में शंबल नाम के राजा का राज था। उसके यहां बड़े-बड़े वीर और मल्लयोद्धा, यानी पहलवान, रहते थे।

एक बार राजा शंबल के दरबार में महामल्ल नाम का एक पहलवान आया। वह कई राज्यों में कई पहलवानों को हरा कर पुरस्कार, उपाधियां प्राप्त कर चुका था।

दरबार में पहुंचते ही महामल्ल ने राजा शंबल को संबोधित करते हुए कहा, ''राजन्! आपके राज्य में यदि कोई मल्ल-योद्धा है, तो उसे बुलवाइए। मैं उसे कुछ ही मिनटों में हरा दूंगा। यदि आपके यहां ऐसा कोई योद्धा नहीं है, तो फिर आप अविलंब मुझे अपने यहां की उपाधि तथा प्रशंसा-पत्र प्रदान करें।''

महामल्ल के गर्व भरे दावे को सुनकर सभी दरबारी सन्न रह गये। राजा की समझ में नहीं आ रहा था कि क्या उत्तर दे।

तभी मंत्री एकाएक उठकर यूं बोला, ''दयानिधान.। हमारे यहां के चंड-प्रचंड-दोर्दंड गोलमल्ल के सामने कोई भी मल्लयोद्धा टिक नहीं सकता। यह बात सभी जानते हैं। वह कहीं बाहर गया हुआ है। दो-एक दिन में आयेगा।''

खैर, महामल्ल के लिए पूरे सम्मान के साथ राजमहल में रहने की व्यवस्था कर दी गयी। उसके कानों में मंत्री की बात बराबर गूंजे जा रही थी। वह गोलमल्ल के बारे में ज़्यादा से ज़्यादा जानकारी प्राप्त कर लेना चाहता था। इसलिए वह नौकरों से कुरेद-कुरेद कर सवाल पूछ रहा था।

नौकरों ने उसे जो बताया, वह इस प्रकार था :''गोलमल्ल यहां के सभी मल्लयोद्धाओं के गुरु हैं। वह हमेशा योग साधना में लीन

रहते हैं । वह तभी बाहर निकलते हैं जब राज्य की प्रतिष्ठा पर आंच आ रही हो । उनका शरीर वज्र के समान है ।"

दूसरे दिन महामल्ल के विश्रामकक्ष के बाहर एक और विश्रामकक्ष खड़ा कर दिया गया । उस विश्रामकक्ष का प्रवेश-द्वार काफी ऊंचा और चौड़ा था । उसे देखकर महामल्ल ने आश्चर्य से भरकर नौकरों से पूछा, "यह क्या है?"

नौकरों ने कहा, "गोलमल्ल जी आने वाले हैं । वह विशाल शरीर वाले हैं । साधारण द्वार में से वह निकल नहीं पाते । इसीलिए इतना बड़ा द्वार बनवाया गया है ।"

उधर अपने मजदूरों से राज-मिस्त्री कह रहा था, "अरे, फर्श को अच्छी तरह दुरमुस से कूटो ताकि वह खूब पक्का हो जाये, वरना गोलमल्ल जी का पांव पडते ही वह धंस जायेगा और उसमें गड्ढे पड़ जायेंगे ।"

अब गोलमल्ल के लिए बड़े-बड़े बर्तनों में बादाम, पिस्ता, दूध, मक्खन आदि आने लगे । यह तमाम हलचल महामल्ल अपनी आंखों से देख रहा था ।

उसी शाम राजधानी में घोषणा हुई कि अगले दिन नये विश्रामकक्ष में गोलमल्ल जी प्रवेश करेंगे । फिर सुबह-सुबह एक विशाल बग्घी वहां आकर रुकी । उसे आठ घोड़े खींच रहे थे । वहां उपस्थित सभी लोग ज़ोर-ज़ोर से नारे लगाने लगे, "चडं-प्रचंड-दोर्दंड गोलमल्ल की जय!"

गोलमल्ल का स्वागत करने के लिए वहां राजा शंबल स्वयं भी उपस्थित था ।

कुछ ही देर बाद राजा के पास एक सैनिक आया और बोला, "अन्नदाता, महामल्ल अपने विश्राम-कक्ष में नहीं है । पहरेदार कहते हैं कि वह बिना कुछ कहे ही वहां से चला गया है ।"

राजा का मंत्री भी वहीं पास ही खड़ा था । वह धीमे से मुस्करा कर बोला, "महाराज, हमने जो सोचा था, वैसा ही हुआ । महामल्ल हमारी गतिविधि से इतना भयभीत हो गया कि वह नगर छोड़कर भाग निकला । वह अब तक हमारे राज्य की सीमा भी पारकर चुका होगा ।"

प्रकृति: रूप अनेक

दोस्त; जो काम आये

पशुओं की पूंछ अक्सर मक्खी उड़ाने के काम आती है, विशेषकर तब जब वह लंबी हो । लेकिन जब कभी किसी पशु को यह लगे कि उसकी पूंछ शरीर के किन्हीं हिस्सों तक नहीं पहुंच पा रही, तो वह किसी पशु-मित्र की तलाश में निकलता है । तब ये दोनों मित्र एक दूसरे से सटकर ऐसे खड़े हो जाते हैं जिससे उनकी पूछें एक-दूसरे पर से, उन्हें काटने वाले जीवों को आसानी से भगा सकें । आम तौर पर यह 'मित्र' उसकी ही 'बिरादरी' का होता है ।
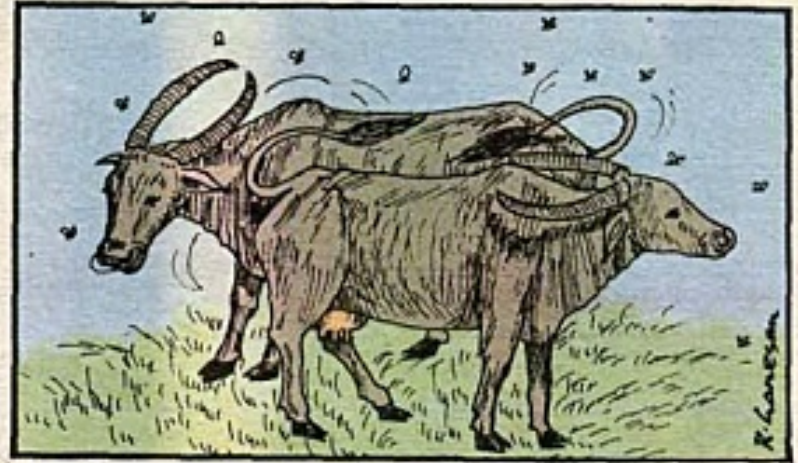
दिन के समय शुभरात्रि

जिस प्रकार हम सुबह जगते हैं और रात को सोते हैं, उसी प्रकार कुछ पौधों का भी जगने और सोने का ढंग होता है । उनके फूल दिन की रोशनी में खिलते हैं और अंधेरा होने पर बंद हो जाते हैं । हमें हैरानी नहीं होनी चाहिए अगर यह प्रक्रिया वे रात्रि के कृत्रिम प्रकाश में भी दोहरायें, यानी वे प्रकाश में खिल उठें और दिन में, जब उन्हें अंधेरे कमरे में रखा जाये, तो बंद हो जायें ।
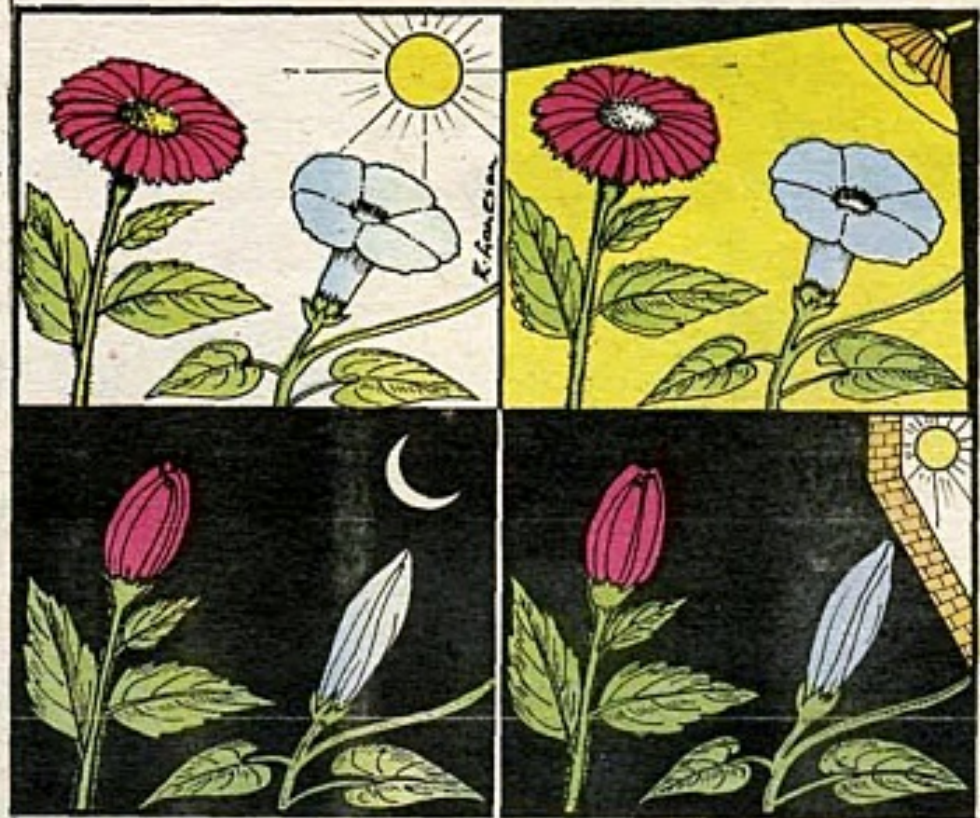
लंबा जीवन

जीवित प्राणियों में मनुष्य ही ऐसा प्राणी है जिसकी आयु लंबी होती है । लेकिन कुछ जीव ऐसे भी हैं जिनकी आयु मनुष्य की आयु से भी लंबी होती है । उदाहरण के लिए सी-अनीमोनी, जो कि एक समुद्री पौधा है, सदियों तक वैसे ही बना रहता है । स्पंज की आयु का भी कोई हिसाब नहीं । प्रयोगशालाओं में इनके जो नमूने रखे गये, वे १०० वर्ष से भी अधिक समय तक जीवित रहे । उनकी लंबी आयु का रहस्य यह है कि इनके वे अंग जो

NOW, GIVE YOUR SON
a life-like model
of the world's finest gun

No more toys for your big little boy! Now, you can give him the real thrill of the world's greatest gun.

Tru-Gun. A true-to-life model of the UZI submachine gun developed by Mossad – Israel's elite commando unit.

The feel. The finish. The size. The shape. The sound. Tru-Gun is so much like the original, you can't tell the difference – till you pull the trigger.

- **squirts water in a powerful jet**
- **fires non-stop in a rapid burst**
- **unbreakable high-grade plastic**
- **no sharp edges, no metal pieces**
- **available in black, olive green, metallic silver**

U.Z.I. submachine gun

A life-like gun loaded with fun

Special Introductory Blast!

Cut out this coupon and shoot over to your favourite toy store, to get 5% off on your TRU-GUN U.Z.I. submachine gun.

Name : ....

Age : .... Class: ....

Address : ....

....

Be quick on the draw, big shot! This offer closes on 31st December 1992

फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता :: पुरस्कार १००)

पुरस्कृत परिचयोक्तियां मार्च, १९९३ के अंक में प्रकाशित की जाएँगी ।

M. Natarajan

M. Natarajan

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियां एक शब्द या छोटे वाक्य में हों । ★ १० जनवरी'९३ तक परिचयोक्तियां प्राप्त होनी चाहिए । ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) रु. १००-/ का पुरस्कार दिया जाएगा । ★ दोनों परिचयोक्तियां केवल कार्ड पर लिखकर इस पते पर भेजें : **चन्दामामा फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता, मद्रास-२६.**

नवम्बर १९९२ की प्रतियोगिता के परिणाम

पहला फोटो : **मिलकर रहना कितना प्यारा!**

दूसरा फोटो : **मां का आँचल सब से न्यारा!!**

प्रेषक : अमित कुमार सिंह c/oश्री हरेन्द्र सिंह, पटनिया टोला, साहिबगंज-८१६१०१ (बिहार)

पुरस्कार की राशि रु. १००/- इस महीने के अंत में भेजी जाएगी ।

चन्दामामा

भारत में वार्षिक चन्दा : रु. ४८/-

चन्दा भेजने का पता :

डाल्टन एजन्सीज़, चन्दामामा बिल्डिंग्ज़, वडपलनी,

मद्रास-६०० ०२६.

Printed by B.V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., 188 N.S.K. Salai, Madras 600 026 (India) and Published by B. VISHWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

CHANDAMAMA
(Hindi)

January 1993
Regd. No. M. 54

Crrrunch

And you'll love the fruit in it!

nutrine

Soft Hearts

Juicy, Crunchy, Fruity treats

FREE!

Send 20 Nutrine Soft Hearts wrappers for a **FREE** Bunny mask to Nutrine Confectionery Co. Ltd., 232, Kilpauk Garden Road Kilpauk, Madras 10.

* Stocks also available without this offer.

Visesh/NC/8938